



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“
निर्जरा

निर्जरा ने निर्जरा करणी,
ए दोनूँ जीव नें आरणी।।

आत्मशुद्धि और आत्मशुद्धि
की प्रक्रिया- ये दोनों ही
आदरणीय हैं।

- आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

● वर्ष 27 ● अंक 08 ● 24 नवम्बर - 30 नवम्बर, 2025



प्रत्येक सोमवार

● प्रकाशन तिथि : 22-11-2025 ● पेज 16

₹ 10 रुपये



साधुओं के दर्शन से
मिलता है अचिन्त्य
लाभ : आचार्यश्री
महाश्रमण

पेज 02



धर्म की शरण से
मिलता है जन्म-मरण
की परंपरा से छुटकारा
: आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 14

Address
Here

विवेक पूर्ण आचरण का हो सतत प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

खजुरी, डूंगरपुर।

16 नवम्बर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि अहिंसा एक धर्म है। सभी प्राणी अहंतव्य हैं — यह धर्म शाश्वत और ध्रुव है। अहिंसा जीवन-शैली का अंग भी बन सकती है। यदि अहिंसा है, तो जीवन में शान्ति और सुख रहते हैं, और आत्मा भी उत्तम मार्ग पर अग्रसर रहती है। जहाँ द्रव्य-हिंसा अथवा भाव-हिंसा है, वह पाप है। हिंसा से दुःख उत्पन्न होते हैं। कोई व्यक्ति धर्म, स्वर्ग-नरक आदि को न भी माने, तब भी यदि वह अहिंसा के पथ पर चलता है तो यह उसके लिए हितकारी सिद्ध होगा।

हिंसा के दो प्रकार बताए गए हैं —

आरंभजा हिंसा

संकल्पजा हिंसा

शरीर के पोषण से जुड़ी प्रवृत्तियाँ, जैसे भोजन, पानी आदि में भी हिंसा हो सकती है। इसी प्रकार



खेती-बाड़ी, रसोई पकाने आदि में भी हिंसा का होना संभव है। इस प्रकार गृहस्थ जीवन में कई हिंसा-स्थल हो सकते हैं। अतः जीवन-निर्वाह के

संदर्भ में जो हिंसा होती है, वह आवश्यक हिंसा या आरंभजा हिंसा कहलाती है।

दूसरी है — संकल्पजा हिंसा। क्रोध, मोह, लोभ,

ईर्ष्या आदि के प्रभाव में संकल्पपूर्वक किसी का वध करना संकल्पजा हिंसा है। यह हिंसा महापाप है। साधु जीवन भर सर्व-प्राणातिपात-विरमण व्रत की साधना करते हैं — यह अत्यंत उच्च कोटि की अहिंसा-साधना है। गृहस्थ को भी यथासंभव संकल्पजा हिंसा से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। मांसाहार तथा अनन्त-काय के सेवन का त्याग करें और जानबूझकर की जाने वाली हिंसा से दूर रहें — इससे काफी हद तक हिंसा का परिहार संभव है। विवेकपूर्वक आचरण करने का सतत प्रयास होना चाहिए। इस प्रकार अहिंसा की भावना क्रमशः विकसित होती है।

व्यक्ति को चाहिए कि वह किसी के प्रति बैर-भाव न रखे। अपने जीवन में धर्म को समाहित करने का प्रयास करे। सभी के जीवन में अहिंसा, सच्चाई, नैतिकता, ईमानदारी आदि गुणों का विकास हो — यही आत्मा के लिए श्रेष्ठ और श्रेयस्कर है।

आचार्य प्रवर के निर्देशानुसार समणी विनय प्रज्ञा जी ने अंग्रेजी भाषा में अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ईमानदारी के प्रति रहे निष्ठा : आचार्यश्री महाश्रमण

बिछीवाड़ा।

17 नवम्बर, 2025

पुण्य सम्राट युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन वांगमय में अठारह पाप बताए गए हैं इनमें तीसरा पाप अदत्तादान है। अदत्तादान का अर्थ है - जो वस्तु हमें नहीं दी गई है, उसे ले लेना अर्थात् चोरी। किसी के घर में जाएं और किसी बिना दी हुई वस्तु को उठाकर रख लेना चोरी है। चोरी को पाप बतलाया गया है।

व्यक्ति के घर में कोई कमी नहीं

होने पर भी लोभ के कारण चोरी कर सकता है। किसी वस्तु के प्रति व्यक्ति के मन में लोभ व मोह होता है तो वह चोरी कर लेता है।

ईमानदारी को सर्वोत्तम नीति कहा गया है। जो व्यक्ति ईमानदारी रखता है, उसकी इज्जत भी बढ़ सकती है और उसके प्रति विश्वास का भाव भी पैदा हो सकता है। लोभ के कारण दूसरे की वस्तु को चोरी के रूप में लेने से जो पाप कर्म का बन्ध होता है उसका फल इस जन्म में अथवा आगे के जन्मों में भोगना पड़ता है। इसलिए यह चिन्तन रहे कि दूसरे की चीज धूल के समान है, उसे



मुझे नहीं उठाना है।

ईमानदारी की भावना बहुत बड़ी बात होती है। अतः व्यक्ति का मनोभाव,

दृष्टिकोण, निष्ठा, ईमानदारी के प्रति रहनी चाहिए। हमें यह मानव जीवन मिला है इसमें बेईमानी, धोखाधड़ी,

झूठ-कपट करके पाप कर्म का बंधन नहीं करना चाहिए। जीवन संयम और सादगी से जीना चाहिए। थोड़े से यदि हमारा जीवन चल सकता है तो धोखाधड़ी करके धन-अर्जन का प्रयास नहीं करना चाहिए। ईमानदारी सभी के लिए आवश्यक है। ईमानदारी एक पवित्र चीज है अतः व्यक्ति बेईमानी से बचे और ईमानदारी का पालन करे, यह काम्य है।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि आज यहाँ बिछीवाड़ा में आना हुआ है। यहाँ के सभी लोगों में आध्यात्मिक-धार्मिक विकास हो। (शेष पेज 13 पर)

साधुओं के दर्शन से मिलता है अचिन्त्य लाभ : आचार्यश्री महाश्रमण

शामलाजी।

15 नवम्बर, 2025

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशस्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम-आधारित अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में साधुओं की संगति का बहुत महत्व है। प्रश्न उठता है कि साधुओं की पर्युपासना करने से क्या लाभ होता है? उत्तर यह है कि पहली बात तो साधुओं का दर्शन ही अपने आप में एक महान उपलब्धि है — वे चलते-फिरते तीर्थ के समान होते हैं। साधु अहिंसक और त्यागी होने चाहिए। ऐसे साधुओं के दर्शन करने से दर्शनकर्ता के पाप झड़ सकते हैं, निर्जरा हो सकती है।

साधुओं का एक घड़ी, आधी घड़ी, अथवा पाव घड़ी का भी सान्निध्य मिल जाए तो अपार लाभ संभव है। मोह-माया से रहित, त्याग-वैराग्य और आध्यात्मिकता से ओतप्रोत साधु के दर्शन एवं उनके प्रवचन का श्रवण हो जाए तो अत्यंत लाभ प्राप्त हो सकता है।



आँखों से दर्शन का लाभ मिलता है और कानों से प्रवचन का श्रवण होने पर श्रवणेंद्रिय को लाभ होता है। सुनने से व्यक्ति को आत्मा-परमात्मा का ज्ञान, तथा हेय-उपादेय का विवेक प्राप्त होता है। इससे व्यक्ति में धर्म के स्वीकरण की भावना जागती है तथा पापकारी कार्यों को त्यागने की समझ विकसित होती है। यही अध्यात्म का विज्ञान है। त्याग-प्रत्याख्यान की भावना जागृत होने से संवर आता है, और संयम तथा तप के बल से कभी व्यक्ति की आत्मा मोक्ष-पथ को प्राप्त कर

सकती है। इसलिए साधुओं की संगति और धर्मकथा का श्रवण अत्यंत दुर्लभ और पुण्यदायक कहा गया है।

आचार्य प्रवर ने आगे फरमाया कि आज शामलाजी में आगमन हुआ है। अभी तक गुजरात में प्रवास था। अब आगे राजस्थान के मेवाड़, मारवाड़ और छोटी खाटू की दिशा में बढ़ना है। गुजरात में हमारा चातुर्मास प्रवास हुआ है और अब विदाई का समय आ गया है। गुजरात से वियोग और राजस्थान से संयोग का प्रसंग बन रहा है। इस बार गुजरात में लम्बा



प्रवास रहा। गुजरात के पाँच क्षेत्रों में हमारा आगमन हुआ और अब राजस्थान में प्रवेश का अवसर आ रहा है। हमारे परम पूज्य आचार्यों के प्रवास का मुख्य क्षेत्र राजस्थान ही रहा है।

आज शामलाजी में उत्तर गुजरात श्रावक समाज द्वारा मंगल भावना समारोह आयोजित किया गया। आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरांत भिलोड़ा के महावीर चावत ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। भिलोड़ा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी। कथाकार श्यामसुंदर

महाराज ने स्वागत अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। खेड़ ब्रह्मा के शंकरलाल जैन ने के.एल. हॉस्पिटल में आचार्य महाश्रमण इमेजिंग सेंटर के लोकार्पण के संदर्भ में अपने भाव व्यक्त किए। इमेजिंग सेंटर से संबंधित पट्ट का लोकार्पण आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में संपन्न हुआ। अहमदाबाद चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष अरविंद संचेती ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल, अहमदाबाद ने मंगल गीत का सुमधुर संगान किया। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जो प्राप्त है, वह पर्याप्त है : आचार्यश्री महाश्रमण

राजेन्द्रनगर, साबरकांठा।

13 नवम्बर, 2025

जैनागम व्यख्याकार तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने राजेन्द्रनगर में स्थित एम.एम. चौधरी ऑर्ट्स कॉलेज परिसर में आर्हत वाङ्मय पर आधारित पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन वाङ्मय में 'आश्रव' शब्द आता है। आश्रव अर्थात् वह परिणाम, वह भाव, वह प्रवृत्ति जिसके द्वारा कर्मों का आगमन होता है और कर्म आत्मा से चिपक जाते हैं। हिंसा, झूठ, चोरी, क्रोध, अहंकार, माया, लोभ आदि अनेक आचरण ऐसे हैं जिनसे पापकर्मों का बंधन होता है। इन प्रवृत्तियों से आत्मा मलिन बनती है और उनके फल का भोग भी स्वयं को ही करना पड़ता है।

आचार्यश्री ने कहा कि यदि कोई साधु बन जाए और साधुत्व का उत्तम पालन करे तो पापकर्मों से बहुत बचाव हो सकता है। सभी के लिए साधुत्व करना संभव न भी हो, तो भी गृहस्थ जीवन में रहकर व्यक्ति पाप से बचे और बुराइयों से दूर रहने का प्रयास

करे। बच्चों में भी यह संस्कार आना चाहिए कि बुरे कार्यों और पापकर्मों से बचना है। यदि यह भावना भीतर तक उतर जाए तो उनका जीवन श्रेष्ठ बन सकता है।

आज अनेक विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय ज्ञान के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। विद्यार्थियों को अनेक विषयों और भाषाओं का ज्ञान दिया जाता है, जो आवश्यक भी है। परंतु इसके साथ-साथ बच्चों में अच्छे संस्कार देने का प्रयास भी उतना ही आवश्यक है। बच्चों में ईमानदारी की भावना, अहिंसा का संकल्प, नशामुक्ति, विनयशीलता और साथ ही उत्कृष्ट बुद्धि व ज्ञान हो—तो ऐसे बच्चे समाज और परिवार दोनों के लिए अत्यंत उपयोगी बन सकते हैं।

विद्या संस्थानों में अध्यात्म, योग और ध्यान का ज्ञान तथा प्रयोग भी होना चाहिए। इन माध्यमों से बच्चों को केवल शिक्षित ही नहीं बल्कि संस्कारित भी बनाया जा सकता है। धन अर्जन और आजीविका चलाना शिक्षा का एक उद्देश्य हो सकता है, इसमें कोई गलत नहीं, लेकिन इसके साथ अच्छा जीवन



जीने की कला भी आनी चाहिए। तभी जीवन का संतुलित और समग्र विकास संभव है। शिक्षा का सही विकास दूसरों की पवित्र सेवा का भी कार्य है।

आचार्यश्री ने कहा कि आसक्ति, लोभ और मोह से बचना चाहिए। बच्चों को आवश्यकता और आकांक्षा का अंतर

समझ आना चाहिए। आवश्यकताएँ पूरी हो सकती हैं, पर आकांक्षाएँ अनंत हैं, वे कभी समाप्त नहीं होतीं। धन का असीम संग्रह उचित नहीं। संतोषी व्यक्ति सदैव सुखी रहता है और कामनाएँ व्यक्ति को दुःखी बनाती हैं। अतः यह भावना रहे—जो प्राप्त है वही पर्याप्त है।

व्यापार और धंधों में ईमानदारी होना आवश्यक है। धोखाधड़ी, ठगी और बेईमानी से कमाया धन वास्तविक अर्थ नहीं, मात्र अर्थाभास है। बेईमानी से अर्जित धन मलिन होता है, जबकि मेहनत, सत्य और ईमानदारी से कमाया धन ही सच्चा धन है। धन के उपभोग में भी संयम होना चाहिए। व्यक्ति अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहे और अनुशासित जीवनशैली अपनाए तो जीवन सुखमय बन सकता है।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में उपस्थित साबरकांठा जिले के कलेक्टर ललितभाई ने आचार्यश्री के दर्शन कर अपनी जिज्ञासाएँ प्रस्तुत कीं, जिनका पूज्यवर ने समाधान किया। जिला कलेक्टर महोदय ने अपनी भावाभिव्यक्ति भी दी। समणी भविक प्रज्ञाजी ने अंग्रेजी भाषा में अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। विश्व भारती एजुकेशन संस्थान द्वारा संचालित इस स्कूल के प्रिंसिपल प्रवीणभाई चौधरी ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

40 दिनों का प्रवास रहा ऐतिहासिक

दुबई।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या डा. समणी मंजूप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी का दुबई में 40 दिन का प्रवास रहा। समणी वृन्द के स्वागत समारोह में 100 से अधिक श्राविकाओं ने भाग लिया और गुरुदेव एवं समणी जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। How do We Start the Daily Routine विषय पर समणी मंजूप्रज्ञा जी ने सहज और प्रेरक प्रवचन दिया।

पर्युषण काल में 4 गति विषय पर व्याख्यान माला रही। जिसमें लोगों की हाइब्रिड विशेष उपस्थिति रही।

तेरापंथी ही नहीं अपितु अन्य जैन समुदाय के श्रावक-श्राविकाओं ने भी लाभ उठाया। 13 की तपस्या, अठाई तेले, अनेक उपवास हुए एवं संवत्सरी के दिन 27 पौषध और 2 संवर हुए तथा श्री जैन संघ के साथ सामूहिक क्षमायाचना का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें समणी जी का उत्कृष्ट प्रवचन रहा। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ दुबई सभा ने समणी जी के सान्निध्य में भक्तामर अनुष्ठान कराया गया। जिसमें 90 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

इस पावन अवसर पर सभी ने गहन आध्यात्मिक आनन्द और लाभ अनुभव किया। इसी के साथ सुमित बोथरा के घर पर प्रस्थान हुआ।

आचार्यश्री भिक्षु चरमोत्सव के अवसर पर अखंड जप 6: 00 बजे से 6: 30 बजे तक 50 श्रावक श्राविकाओं ने किया तथा अनेक लोगों ने घर-घर जाप किया। इसी के साथ रात्रिकालीन भक्ति संध्या का भी आयोजन किया गया। जिसमें 100 से अधिक लोगों की उपस्थिति रही और भक्ति का लाभ उठाया। 1.5 वर्ष तक के बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। नशाला के विद्यार्थियों ने आचार्य भिक्षु के जीवन की झांकी अत्यंत सुंदर और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत की। समणीजी का श्रम संघ प्रभावक रहा।

समणी वृन्द के सान्निध्य में ध्यान शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर के दौरान विविध मंत्रों की साधना सम्पन्न हुई जिसमें लगभग 80 अदभुत श्रावक श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया। जिसमें तेरापंथी स्थानकवासी मंदिर वालों ने भी भाग लिया। विजय बैद, परीक्षित, दीपक, शोभा का श्रम प्रशंसनीय रहा।

समणी वृंद आबूधाबी भी पधारे और

वहां से उन्होंने भक्तामर अनुष्ठान कराया गया। उपस्थित सभी ने उनके मार्गदर्शन और सान्निध्य का लाभ उठाया। मंगल भावना समारोह का आयोजन किया गया। छोटे बच्चों से लेकर वृद्धजनों ने अपने विचार व्यक्त किये तथा समणी वृन्द के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए गुरु आज्ञा से पुनः दुबई पधारने की अर्ज की। इस पुण्य अवसर पर लगभग 250 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। और इस प्रवास में सभा अध्यक्ष अमित बैद, मंत्री ज्योति समदरिया, उपाध्यक्ष परिक्षित बैद एवं देवेन्द्र मेहता, सुमित बोथरा, राजेन्द्र बैंगानी, दिनेश कोठारी, राकेश पटावरी ने समणी जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। युवति मण्डल ने 16 सतियों की प्रस्तुति की एवं महिला मण्डल ने राजमाताएं बनकर मंगल भावना व्यक्त की। ऐसा ऐतिहासिक प्रवास एवं श्रम की सरिता से अद्भुत संघ की प्रभावना हुई। 8 अट्टाइ एवं सुमित बोथरा ने 13 की तपस्या की।

सरोज ने 11 की तपस्या कर बेटे का साथ दिलाया। ललित प्रमिला मुथा, पुजा मेहता, कपिल जैन, श्वेता जैन, गुज्जन जैन, नवनीता पटावरी ने मासखमण की तपस्या कर पूरे UAE में पहली बार नव

इतिहस रचाया।

समणी वृंद के मार्गदर्शन में बच्चों ने use me and dont use me विषय पर अत्यंत सुंदर प्रस्तुति दी। श्राविकाओं ने 16 महासतियों पर आधारित एक शब्द-चित्र गीतिका के साथ भावपूर्ण प्रस्तुति दी। समणी वृंद ने श्रावक समाज को बारह व्रत के बारे में जानकारी दी गई। हमें यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि समणी वृंद की प्रेरणा से लगभग 125 श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धापूर्वक 12 व्रत स्वीकार किए।

समणी वृन्द 40 दिन के प्रवास के दौरान दुबई 80 के लगभग, शाहजहां और आबू धाबी के घरों में पधारे। कभी कभी एक दिन में आपने 10-12 घरों में भी पधारना हुआ। न केवल तेरापंथी परिवार अपितु अन्य जैन समुदाय के घरों में भी धर्म की ज्योत जलाई।

समणी वृन्द के अथक परिश्रम एवं प्रेरणा से जो परिवार अभी तक संपर्क में नहीं थे वे सभी संघ की गतिविधियों में सम्मिलित होने लगे हैं।

इस प्रवास को सफलतम बनाने में सभाध्यक्ष अमित बैद, सुमित बोथरा एवं प्रदीप छाजेड़ का विशेष सहयोग रहा और उनकी पूरी टीम का अथक परिश्रम रहा।

आध्यात्मिक आयोजन सम्पन्न

गुडियात्तम (तमिलनाडु)। अखिल

भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में गुडियात्तम सभा भवन में एक अत्यंत पवित्र और ऐतिहासिक आध्यात्मिक आयोजन सम्पन्न हुआ। विश्व स्तरीय विश्व शांति हेतु अद्वितीय 'ॐ भिक्षु' जप अनुष्ठान। इस अनुष्ठान का मुख्य उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व में शांति, सद्भावना और अहिंसा का संदेश प्रसारित करना था। यह दिव्य अनुष्ठान मुनि रश्मिकुमार जी एवं मुनि प्रियांशु कुमार जी के पावन सान्निध्य में संपन्न हुआ। साधु-साध्वियों की प्रेरणादायी वाणी और आशीर्वचन से वातावरण पूर्णतः आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत हो गया। कार्यक्रम में गुडियात्तम तेरापंथ महिला मंडल की लगभग 50 सदस्याओं ने भक्ति भाव से भाग लिया। साथ ही कन्या मंडल की बालिकाओं ने भी श्रद्धा और अनुशासन के साथ सहभागिता की, जिससे नई पीढ़ी में आध्यात्मिक संस्कारों का संचार हुआ। जप के दौरान सभी ने मिलकर हजारों बार 'ॐ भिक्षु' का उच्चारण किया, जिससे सभा भवन में एक अद्भुत प्रकंपन और शांति का वातावरण निर्मित हुआ। यह जप न केवल सामूहिक साधना का प्रतीक था, बल्कि विश्व कल्याण, मानवता और आत्मशुद्धि की दिशा में एक प्रेरक कदम भी रहा।

भक्तामर श्रद्धा व भक्ति का उत्कृष्ट रसायन है

बालोतरा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, बालोतरा के तत्वावधान में सजोड़े दिव्य भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान का भव्य एवं गरिमामय कार्यक्रम आयोजित हुआ। स्वस्तिक आकार में बैठे जोड़े सबके लिए आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बन गए। साध्वीश्री जी ने विशेष ऊर्जा के साथ ऋद्धि मंत्रों एवं मंत्रों के साथ प्रभावोत्पादक अनुष्ठान करवाया। सभी अनुष्ठान कर्ताओं ने अनुपम ऊर्जा की अनुभूति की। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा भक्तामर स्तोत्र आचार्य मानतुंग की वो रचना है जिसकी रचना उन्होंने काल कोठरी में बैठकर की। भगवान आदिनाथ के प्रति उनकी श्रद्धा एवं भक्ति से चमत्कार घटित हुआ और वो अड़तालीस तालों से बाहर निकलकर आ गए। साध्वीश्री ने कहा यह स्तोत्र श्रद्धा व भक्ति का वह उत्कृष्ट रसायन है। जिसके संगान मात्र से शरीर के रोम रोम में नई स्फूर्ति का संचरण होता है।

भक्तामर स्तोत्र ऊर्जा का अक्षय स्रोत है। इसकी साधना करने वाला कण-कण में ऊर्जा की अनुभूति करता है। यह कल्पवृक्ष के तुल्य है जो इसकी साधना करने वाले साधकों की कामनाओं एवं मनोरथ को पूर्ण कर सकता है। भगवान आदिनाथ की यह स्तुति विघ्न विनाशक मंगलकारक एवं आनंदप्रदायी है। भक्तामर अनुष्ठान के द्वारा प्राण ऊर्जा एवं वातावरण में संचेतनता का जागरण होता है। हमारे जीवन में भी अनेक समस्याओं के ताले लगे हुए हैं। उन सारे तालों की चाबी है भक्तामर स्तोत्र। हर भाई बहन को यह स्तोत्र प्रतिदिन करना चाहिए। जीवन में खुशहाली आ सकती है। साध्वीश्री ने कहा तेरापंथ सभा ने बहुत कम समय में सुन्दर व्यवस्था कर कार्यक्रम को भव्यता प्रदान की है। तेयुप महिला मंडल का सराहनीय सहयोग रहा है। साध्वी कर्णिकाश्री जी एवं डॉ साध्वी सुधाप्रभाजी ने मंगल संगान किया। सभाध्यक्ष महेन्द्र बैद मुथा ने पूरी परिषद की ओर से साध्वीश्री जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

मंगल भावना समारोह आयोजित

बायतु।

आचार्य महाश्रमण की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी आदि साध्वीवृंद ने बायतू में ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न कर मंगल पाठ प्रदान कर सभा अध्यक्ष राकेश जैन को भवन संभला कर मंगल विहार किया।

तेयुप से राजेश बालड़ व मनोज चौपड़ा ने बताया कि साध्वीवृंद छोटी खाटू मर्यादा महोत्सव पर गुरु दर्शन कर 2026 में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में लाडनु में आयोजित 'योगक्षेम वर्ष' में भाग लेंगे। इससे पूर्व चातुर्मास संपन्नता पर आयोजित मंगल भावना समारोह में साध्वी जिनरेखा जी ने उपदेश में कहा कि भारतीय संस्कृति के चार आदर्श हैं मैत्री, प्रमोद, करुणा, मध्यस्थता ये तत्व समाज में सहिष्णुता, सद्भावना का वातावरण निर्मित करते हैं ईर्ष्या आत्म साधना में बाधक तत्व है दावा पेश नहीं कर मध्यस्थता की भावना का विकास करे, वही समाज आगे बढ़ता है जिसमें प्रमोद

भावना होती है। बुजुर्गों की सलाह, युवकों की शक्ति से हर कार्य सुगमता से होता है यहाँ साधना का अच्छा वातावरण मिला तेरापंथ समाज बायतु श्रद्धाभक्ति भरा क्षेत्र है जिस पर सदैव गुरु कृपा रहती है।

साध्वी मधुरयशा जी ने कहा चातुर्मासकाल में सम्यक्त्व, श्रद्धा, संयम की त्रिवेणी बहती रहें आत्मा के उध्वारोहण की प्रेरणा मिलती रहें। साध्वी श्वेतप्रभा जी ने बायतू चातुर्मास को ऐतिहासिक बताते हुए उत्साह से सभी को संघ व संघपति के प्रति निष्ठा समर्पण भाव से कार्य करने की प्रेरणा दी। साध्वी धवलप्रभा जी ने अपनी जन्मभूमि में चातुर्मास को विशेष बताते हुए निरंतर ज्ञानशाला संचालन, शनिवार सामयिक, जागरूक श्रावक बन धर्म उपासना करने की प्रेरणा दी। साध्वी मार्दवयशा जी ने अपनी कर्मभूमि में चातुर्मास का अनुभव बताते हुए कहा बायतु क्षेत्र साताकारी क्षेत्र है श्रावक समाज में अच्छी जागरूकता है सभी ज्ञान दर्शन के क्षेत्र में उन्नति करते रहे। साध्वी वृंद ने सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष राकेश जैन, संरक्षक नेमीचंद छाजेड़, कोषाध्यक्ष मदनलाल बालड़, सम्पत राज बालड़, अशोक मण्डोतर, महिला मंडल अध्यक्ष अनिता जैन, भूमि जैन, मनन दर्शन बालड़, संगीता बालड़, पिकी गोलेच्छा, दिशा भंसाली, कन्यामंडल संयोजिका हर्षिता भंसाली, अमृत बालड़ सहित कन्यामंडल, महिला मंडल तथा बालड़ परिवार द्वारा सामूहिक गीत, कविता, भाषण, मुक्तक के माध्यम से साध्वीश्री के प्रति मंगल कामना व्यक्त की कार्यक्रम का कुशल संचालन मनोज चौपड़ा ने करते हुए सभी साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम में बायतु भोपजी सरपंच प्रतिनिधि महेन्द्र चौपड़ा, मांगीलाल बालड़, भागीरथ गोलेच्छा, राजेश बालड़, चंदन मल भंसाली, अशोक मंडोतर, जेठमल छाजेड़, पुखराज बालड़, नेमीचंद बालड़, जुगराज मालू, मंत्री कंचन मालू, पुष्पा देवी बालड़, सुशीला देवी चौपड़ा, केशर देवी, मोहनी देवी आदि उपस्थित रहे।

चातुर्मास संपन्न कर प्रथम आध्यात्मिक मिलन

आमेट।

यूगप्रधान आचार्य महाश्रमण की सूशिष्या साध्वी प्रज्ञाश्री ठाणा-4 बोरज चातुर्मास संपन्नता कर मंगल विहार करते हुए। मार्बल एसोसिएशन आईड्राणा से आमेट 10 किलोमीटर का विहार कर आमेट पधारे। श्रावक समाज ने रास्ते की सेवा उपासना का लाभ लिया।

साध्वी सम्यकप्रभा, साध्वी सौम्याप्रभा साध्वी मलयप्रभा साध्वी दीक्षितप्रभा ठाणा-4 एवं साध्वी प्रज्ञाश्री, साध्वी सरलप्रभा, साध्वी विनयप्रभा, साध्वी प्रतीकप्रभा ठाणा-4 का आध्यात्मिक मिलन हुआ। विवेकानंद कॉलोनी पूनम चंद हिरण के निवास स्थान पर साध्वीश्री का मंगल भावना कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जेटीएन प्रतिनिधि पवन कच्छारा द्वारा अंबापुर नगरी के भाग आज खुल गये हैं सतीवर आये हैं। साध्वी

सम्यकप्रभा एवं साध्वी प्रज्ञाश्री ने प्रेरणा प्रदान करते फरमाया कि आध्यात्मिकता का अर्थ है स्वयं को जानना और दूसरों में शुभ भाव देखना उन्होंने जीवन में संयम सादगी और आत्मानुशासन अपनाने का संदेश दिया। साध्वियों ने सामूहिक गीतिका से स्वागत अभिनंदन किया। मंगल भावना कार्यक्रम में तेरापंथ सभा निवर्तमान अध्यक्ष देवेन्द्र मेहता, संरक्षक महेंद्र बोहरा, उपाध्यक्ष हस्ती मल पामेचा, उपासक शांतिलाल छाजेड़, धर्मचंद खाब्या एवं प्राची कोठारी, महिला मंडल निवर्तमान अध्यक्षा संगीता पामेचा व महिला मंडल सामूहिक गीतिका व संभाषण द्वारा स्वागत अभिनंदन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन व स्वागत अभिनंदन सभा उपाध्यक्ष ज्ञानेश्वर मेहता ने किया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम की जानकारी जेटीएन प्रतिनिधि पवन कच्छारा दी।

साहित्य, संयम और संस्कार का संगम : अणुव्रत लेखक सम्मेलन

अहमदाबाद।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य एवं प्रेरणा से आयोजित अणुव्रत लेखक सम्मेलन साहित्य, संयम और संस्कार का अद्वितीय संगम बन गया। देशभर से आए प्रख्यात साहित्यकारों, चिंतकों, विद्वानों और अणुव्रत प्रेरकों की उपस्थिति ने इस आयोजन को ऐतिहासिक बना दिया। प्रेक्षा विश्वभारती, अहमदाबाद के प्रांगण में आयोजित इस तीन दिवसीय सम्मेलन में साहित्य के विविध आयामों पर सारगर्भित विचार-विमर्श हुआ। उद्घाटन सत्र में वक्ताओं ने कहा कि आज के समय में अणुव्रत दर्शन समाज को नैतिक पुनर्जागरण की दिशा दिखा सकता है, और लेखक वर्ग इसकी धुरी बन सकता है। कार्यक्रम के प्रमुख आकर्षण में अणुव्रत लेखक पुरस्कार – 2025 का सम्मान समारोह रहा, जिसमें हिंदी साहित्य के वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री रघुवीर चौधरी को सम्मानित किया गया।

सम्मेलन में 'संतवाणी और कवि स्वर' काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ। परिवार और प्रकृति साथ चले साथ खिले विषय के विभिन्न पहलुओं एवं 'नैतिकता और लेखन', 'अणुव्रत और समकालीन सृजन'

जैसे विषयों पर महत्वपूर्ण गोष्ठियाँ हुईं। अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक जिनेन्द्र कोठारी ने बताया कि इस सम्मेलन का उद्देश्य साहित्य के माध्यम से अणुव्रत के संदेश को जन-जन तक पहुँचाना है।

सम्मेलन में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी, साध्वी प्रमुखा विश्रुत विभाजी, साध्वी वर्या संबद्ध यशा जी, मुनि डॉ मदन कुमार जी, मुनि कुमारश्रमण जी एवं अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि मनन कुमार का पावन पाथेय प्राप्त हुआ। पद्मश्री डॉ. रघुवीर चौधरी, पद्मश्री डॉ. कुमारपाल भाई देसाई, अमित लोढ़ा (आईपीएस) संवेग लाल भाई, डॉक्टर पी के लहरी (former chief secretary gujrat), डॉ. आनंद प्रकाश, डॉ. कल्पना गवली, डॉ. इंदुमती कठघरे, डॉ. बिशप रवि स्टीफेन, स्वप्निल आचार्य, निवर्तमान अध्यक्ष अणुव्रत विश्व भारती अविनाश नाहर, महामंत्री अणुव्रत विश्व भारती मनोज सिंघी, डॉ. कुसुम लुनिया एवं कैलाश बोरणा उपाध्यक्ष अणुव्रत विश्व भारती, संतोष सुराणा सह संयोजक अणुव्रत लेखक मंच, डिम्पल श्रीमाल अध्यक्ष अणुव्रत समिति अहमदाबाद सहित अनेक पदाधिकारियों ने विचार व्यक्त किए।

मुनिश्री अभय कुमार जी के देवलोक गमन पर उद्गार

● मुनि कमल कुमार ●

तुलसी गुरु कर कमल से दीक्षा की स्वीकार।
सरदारशहर के लाडले, मुनिवर अभय कुमार।।

सुदूर प्रांतों में भ्रमण, गुरु आज्ञा अनुसार।
लंबे लंबे हैं किये, क्रमशः कई विहार।।

तुलसी महाप्रज्ञ वत ही, महाश्रमण भगवान।
ध्याये मुनिवर ने सतत, इसका हर्ष महान।।

मुनिश्री विनय कुमार के, सहयोगी सुखकार।
चंडीगढ़ से ले विदा, पहुंचे सुरपुर द्वार।।

स्मृति सभा में कर रहे, मुनिवर के गुणगान।
कमल हृदय की भावना, शीघ्र वरें शिव स्थान।।

● मुनि श्रेयांस कुमार ●

सरदार शहर के लाडले, मुनिवर अभयकुमार।
भाई भी साथ में, रहते एकाकार।।

अस्वस्थ काल में, आपका चंडीगढ़ प्रवास।
विनय मुनि ने हृदय से, सेवा की सोल्लास।।

स्नेह भाव रखते सदा, शांति श्रेयांस के साथ।
जब भी मिलते प्रेम से, करते दिल की बात।।

आज स्मृतियां कर रहे, जो बीते पल साथ।
शीघ्र वरो निर्वाण पद, श्रेयांस हृदय की बात।।

हरियाणा-पंजाब की राजधानी विख्यात।
चंडीगढ़ में अंत में, चले छोड़ निज ख्यात।।

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी
अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व
साहस भी बना रहना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण

“शासनश्री” मुनि मणिलाल जी के देवलोक गमन पर उद्गार

● मुनि कमल कुमार ●

तुलसी गुरु कर कमल से, दीक्षा की स्वीकार।
महाप्रज्ञ महाश्रमण से, प्राप्त किया सत्कार।।

गुरु कुल में लंबे रहे, चम्पक मुनि के साथ।
भाई जी महाराज की, सेवा की दिन रात।।

चम्पक सागर संत की, सेवा की दिल खोल।
छायावत प्रतिपल रहे, जन-जन के हैं बोल।।

सिरियारी में हैं किये, सर्वाधिक चौमास।
भावी को मंजूर था, जयपुर अंतिम श्वास।।।

अतुल मुनि को अंत में, अवसर मिला महान।
स्मृति सभा में कर रहे, मुनिवर के गुणगान।।

● मुनि श्रेयांस कुमार ●

“शासनश्री” मणिलाल जी, मिलन सार दिलदार।
सिरियारी की कल्पना, हुई नहीं साकार।।

जन्म और दीक्षा उभय, सरदारशहर में खास।
अंत समय जयपुर हुआ, अकस्मात सुरवास।।

महाश्रमण गुरुदेव की कृपा रही अनपार।
“शासनश्री” मुनिवर बने, जन-मन हर्ष अपार।।

गंगाशहर प्रवास में, मिला सहज संयोग।
याद कर रहे हैं सभी, गंगाणे के लोग।।

सागर-सागर तर गए, मणि, शांति सहवास।
की यात्राएं सुगुरु सह, बना सहज इतिहास।।

ऊर्ध्वारोहण हो सतत, श्रेयांस के उद्गार।
स्मृति सभा में कर रहे, स्मृतियां बारम्बार।।

अतुल मुनि को मिल गया, सेवा का उपहार।
सेवा कर के संत दो, पहुंचाए भव पार।।

विविध कार्यक्रमों की श्रृंखला ने भरा नई ऊर्जा का संचार

कृष्णा नगर-गांधीनगर, नई दिल्ली।

तेरापंथ धर्मसंघ के बहुश्रुत परिषद सदस्य मुनि उदित कुमारजी स्वामी का शाहदरा से चातुर्मास समाप्ति उपरांत प्रभावी विहार हुआ और वे श्रद्धाभाव के साथ कृष्णा नगर पहुँचे। उनके प्रवास से क्षेत्र में धार्मिक उत्साह, भक्ति और प्रेरणा की नई तरंग प्रवाहित हुई।

प्रवास काल में विविध मुखी कार्यक्रमों की श्रृंखला रही— तेरापंथ युवक परिषद-गांधीनगर द्वारा 'वीतराग पथ कार्यशाला' का आयोजन हुआ, जिसमें आत्मसंयम और आदर्श जीवन के सूत्रों पर चिंतन हुआ। परिषद द्वारा 'बारह व्रत कार्यशाला' का आयोजन किया। तेरापंथ महिला मंडल

पूर्वी दिल्ली ने 'नवयुवती कार्यशाला' सखी सम्मिट – उड़ान संस्कारों की आयोजित हुई, जिसमें युवा बहनों ने अपने-अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी और जीवन में संस्कार, मर्यादा और आत्मविकास के महत्व को समझा।

तेरापंथ युवक परिषद- गांधीनगर द्वारा 'भक्तामर अनुष्ठान' का भव्य आयोजन हुआ, लगभग 157 दंपति सहित श्रद्धालू श्रावको ने समवेत स्वर में भक्तामर के समुच्चारण से पूरे वातावरण में भक्ति और श्रद्धा की गूंज छा गई। तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा 'Talk That Matter' पॉडकास्ट का आयोजन हुआ, जिसमें किशोरों ने मुनिश्री से जीवन के गूढ़ प्रश्नों पर सार्थक चर्चा की। तेरापंथ युवक

परिषद-गांधीनगर द्वारा 'Make Your Mark' कार्यशाला का आयोजन हुआ, जिसमें युवाओं को अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारण, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच के माध्यम से अपनी विशिष्ट पहचान बनाने के लिए प्रेरित किया गया।

मुनि उदित कुमार जी स्वामी ने अपनी प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा — 'हर आयोजन तभी सार्थक है जब वह हमारे भीतर परिवर्तन लाए। जीवन का उद्देश्य केवल जीना नहीं, बल्कि जागरूकता के साथ जीना है। जब मन शांत, शरीर स्वस्थ और विचार सकारात्मक हों — तभी जीवन वास्तव में आध्यात्मिक बनता है। धर्म हमें मोक्ष ही नहीं, बल्कि संतुलित और स्वस्थ जीवन शैली का संदेश भी देता है।

सम्यक दर्शन कार्यशाला का सफल आयोजन

विजयनगर।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलता जी के पावन सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् एवं समण संस्कृति संकाय द्वारा निर्देशित सम्यक दर्शन कार्यशाला का 10 दिवसीय आयोजन तेयूप विजयनगर द्वारा सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस वर्ष तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक महामना आचार्य भिक्षु के जीवन पर आधारित इस कार्यशाला में भिक्षु त्रिशताब्दी वर्ष के अवसर पर आर्य प्रवर के प्रति समर्पण भाव रखते हुए 300 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता दर्ज कराई तथा परीक्षा हेतु आवेदन फॉर्म भरे। साध्वी संयमलता जी ने अपने मंगल प्रवचन में कहा— 'आचार्य भिक्षु ने जो कहा वह आर्ष वाणी बन गया। जो लिखा वह शास्त्र बन गया, और जो देखा वह पंथ बन गया। उनके जीवन का प्रत्येक पृष्ठ सत्यग्राहिता, सहिष्णुता, उदारता और समताभाव से ओतप्रोत था। कार्यशाला के माध्यम से श्रावक समाज उनके सिद्धांतों को समझने और जीवन में उतारने में सक्षम बनेगा।' कार्यशाला

में साध्वी मार्दवश्री जी ने 'आचार्य भिक्षु' ग्रंथ को अत्यंत रोचक और सरल शैली में श्रावकों के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि आचार्यभिक्षु के विचार धर्मक्रांति के प्रेरक हैं। उनकी दृष्टि में निश्चय और व्यवहार दोनों का समन्वय है। बुद्धि की प्रखरता और अनुभव की सघनता उनके जीवन में स्पष्ट दिखाई देती है। 'एक आचार्य, एक आचार और एक विचार' के सिद्धांत पर आधारित उनका जीवन आज भी तेरापंथ धर्मसंघ को अनुकरणीय बनाता है। कार्यशाला के प्रत्येक सत्र के पश्चात साध्वीश्री द्वारा महिला एवं पुरुष वर्ग से 2-2 प्रश्न पूछे गए, जिनके सही उत्तर देने वालों को मनोहरलाल, राकेश-मुकेश बाबेल परिवार द्वारा पारितोषिक प्रदान किए गए। कार्यशाला का समापन 7 अक्टूबर को हुआ। इस अवसर पर तेयूप विजयनगर अध्यक्ष विकास बाँठिया ने सभी का स्वागत किया तथा कार्यशाला संयोजक एवं परिषद् उपाध्यक्ष पवन बैद ने परीक्षा से संबंधित जानकारी दी। इस सफल आयोजन में पवन बैद, मनीष श्यामसूखा एवं बरखा पुगलिया के श्रम एवं योगदान की सराहना की गई।

'एक दिन का साधु बनें' अनोखा आध्यात्मिक आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ युवक परिषद् हैदराबाद एवं तेरापंथ किशोर मंडल हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में 'Monk For A Day – एक दिन साधु बनें' नामक अद्वितीय आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन, डी.वी. कॉलोनी में संपन्न हुआ। यह दो दिवसीय कार्यक्रम 'युगप्रधान' आचार्यश्री महाश्रमण जी की आज्ञानुवर्ति साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में संपन्न हुआ। इस आयोजन का उद्देश्य युवाओं व सज्जनों को साधु जीवन की सादगी, शांति और आत्मअनुशासन का

अनुभव कराना था। इस विशेष कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने एक दिन के लिए साधु जीवनशैली को अनुभव किया — संयम, ध्यान, सादगी और आत्मचिंतन के माध्यम से अपने भीतर झाँकने का अवसर पाया। इस कार्यक्रम में मुख्य प्रशिक्षक रहे विदित नाहटा, प्रमोद भंडारी, राजेंद्र बैद ने जीवन के अनेक मूल्यों पर अपने बहुमूल्य विचारों को प्रस्तुत किया। तेरापंथ युवक परिषद् के सुदीप नोलखा अरिहंत गुजरानि और प्रवीण श्यामसूखा, किशोर मंडल के ऋषभ भूतोडिया ने बताया कि इस आयोजन ने प्रतिभागियों को गहन आध्यात्मिक प्रेरणा दी और उन्हें जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण प्रदान किया।

ॐभिक्षु जप अनुष्ठान का आयोजन

टिटिलागढ़।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार विश्वव्यापी शांति हेतु ॐ भिक्षु जप अनुष्ठान में तेरापंथ महिला मंडल टिटिलागढ़ द्वारा सामूहिक जप का

आयोजन समणी निर्देशिका डॉ निर्वाणप्रज्ञा जी एवं समणी मध्यस्थ प्रज्ञा जी के सान्निध्य में किया गया। जिसमें 60 भाई बहनों ने सहभागिता दर्ज करवाई। जप एक समय एक साथ लयबद्धता के साथ करने से वातावरण भिक्षुमय बन गया।



संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि



नामकरण संस्कार

■ **साउथ हावड़ा।** चूरू निवासी साउथ हावड़ा प्रवासी बिमल-मंजू बरडिया की सुपौत्री एवं मयंक-सिमरन बरडिया की सुपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के सहयोग से सम्पादित हुआ। संस्कारक संजय कुमार पारख एवं हितेंद्र बैद ने जैन मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम संपादित करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **जयपुर।** पदमचंद सेठिया सुपुत्र श्रीचंद सेठिया का नूतन गृह प्रवेश संस्कार तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर के द्वारा जैन संस्कार विधि से (84, विरासत ट्यूलिप, हंस विहार, मांग्यावास, मानसरोवर, जयपुर) धी संस्कारक पवन जैन ने मंगल भावना पत्रक स्थापित करवाकर सभी रश्में सम्पन्न करवाई।

जीवन विज्ञान व्यक्तित्व निर्माण कार्यशाला

गंगापुर।

विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास जीवन विज्ञान से संभव है मुनि प्रसन्न कुमार ने शिक्षा के चार आयाम हैं (1) शारीरिक (2) मानसिक (3) बौद्धिक (4) भावनात्मक विकास। अभिभावकों का लक्ष्य होता है कि बच्चों का सर्वांगीण विकास एवं निर्माण अच्छे तरीके से हो। जीवन विज्ञान व्यक्तित्व निर्माण और विकास का महत्वपूर्ण आयाम है। इनके प्रयोग से व्यक्ति के भीतर और बाहर परिवर्तन लाया जा सकता है, जिससे एक अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण

होता है। संस्कारों की शिक्षा भावनात्मक परिवर्तन से ही संभव होती है। भीतर के सकारात्मक हार्मोन्स और सही स्वास्थ्य के लिए प्रेक्षाध्यान, कयोत्सर्ग एवं दीर्घश्वास, महाप्राण ध्वनि आवश्यक है- उक्त विचार जूनावास स्कूल के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को मुनि प्रसन्न कुमार ने संबोधित करते हुए कहा।

मुनिश्री ने जीवन विज्ञान के प्रयोग भी कराए एवं नशा मुक्त जीवन जीने का विद्यार्थियों से संकल्प भी कराया। अणुव्रत सप्ताह का सातवां दिन जीवन विज्ञान के कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीत से की गई। मुनि धैर्य कुमार जी ने

महाप्राण ध्वनि का जीवन में फायदे बताते हुए बच्चों को प्रयोग कराया। विद्यालय के प्रिंसिपल किशन लाल शर्मा ने गंगापुर की तुलसी अमृत महाविद्यालय में बच्चों को प्रवेश का जोर देते हुए कहा कि वहां जीवन विज्ञान और संस्कार ज्ञान सिखाया जाता है जिससे बच्चों में संस्कारों का अत्यधिक निर्माण होगा।

अंत में दोनों मुनिश्री के प्रति सभी के द्वारा आभार व्यक्त किया गया। इस कार्यक्रम में स्कूल स्टाफ मंच संयोजिका प्रीती रांका, सह संयोजिका रितु मेहता, सपना लोढ़ा, अंजना रांका, लविश रांका सभी का सहयोग रहा।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत जीवन विज्ञान दिवस

महारौली, नई दिल्ली।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा उद्घोषित, अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा निर्देशित एवं अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली द्वारा आयोजित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत जीवन विज्ञान दिवस का कार्यक्रम तेरापंथ भवन छतरपुर, महारौली में डॉ. साध्वी कुंदन रेखा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री की आर्ष वाणी एवं समिति सदस्यों द्वारा जीवन विज्ञान गीत से हुआ। अपने मंगल उद्बोधन में डॉ. साध्वी कुंदन रेखा जी ने कहा - आज चारों ओर समाज व राष्ट्र निर्माण की चर्चा है, निर्माण भले किसी स्तर पर क्यों ना हो वह स्वागत योग्य है पर इस संदर्भ में एक बात बहुत महत्वपूर्ण है कि जब भी समाज व राष्ट्र निर्माण की चर्चा करने वाले तथा इसकी आकांक्षा रखने वाले सबसे पहले अपने

स्वयं के जीवन का निर्माण करें। अणुव्रत आंदोलन प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने एक सूत्र दिया था- संयम:खल्लु जीवनम्। व्रत के बिना संकल्प शक्ति का जागरण नहीं हो सकता। जीवन जीने की प्रयोगशाला है। विषमता से क्षमता का और अभाव में भाव की रोशनी प्रदान करने वाला है- अणुव्रत। कार्यक्रम में साध्वी सौभाग्ययशा जी और साध्वी कल्याणप्रभा जी ने भी वक्तव्य प्रदान किया। अपने अध्यक्ष वक्तव्य में अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने आज जीवन विज्ञान दिवस पर पधारे सभी का स्वागत व अभिन्नंदन किया। इस अवसर पर जीवन विज्ञान के विभिन्न प्रयोगों द्वारा उन्होंने तनाव मुक्ति के प्रयोग भी कराये। आज के इस समारोह में अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली के निवर्तमान अध्यक्ष मनोज बरमेचा, उपाध्यक्ष मनोज खटेड़, मंत्री मोहित शर्मा, प्रचार प्रसार मंत्री दिनेश शर्मा पूर्व अध्यक्ष शांतिलाल

पटावरी, कार्य समिति सदस्य संजय भाई, राज गुनेचा, कल्पना सेठिया, कविता जैन, अशोक कुमार, आचार्य तुलसी सर्वोदय विद्यालय, पी.बी. शर्मा, संत बाबा नागपाल वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, संतोष कुमार शर्मा, ग्रेट सक्सेस प्वाइंट एकेडमी, बबिता जैन, सिलाई सेंटर, छतरपुर, सरफराज अहमद, ऐट एकेडमी, रंजीत झा, लाइट मून एकेडमी, बलदेव सिंह गुरु ग्रंथ विद्या केंद्र, ब्रज धाम वेद विज्ञान विद्यापीठ, इंजीनियर सच्चिदानंद प्रसाद, प्रीति झा, लक्ष्मी पांडे, प्रिंसिपल श्याम लाल आर्य, सरदार स्वर्ण सिंह, आदि आदि सहित विद्यालयों के प्राचार्य व शिक्षक भी उपस्थित थे। सभी अतिथियों का अणुव्रत समिति ट्रस्ट दिल्ली की ओर से सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन कार्य समिति सदस्य संजय भाई द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन रमेश कांडपाल ने कुशलता पूर्वक किया।



हृदयाघात का एक बड़ा कारण है – मोह की प्रबलता

जयपुर।

मुनि तत्त्वचि जी 'तरुण' ने कहा कि - वर्तमान में हार्टअटैक की समस्या बहुत बढ़ गई है। उन्होंने बताया कि हृदयाघात का एक बड़ा कारण मोह की प्रबलता है। मोह-ममत्व भीतरी बीमारी है। इसका निदान और निराकरण बाह्य साधनों से संभव नहीं है।

अध्यात्म और धर्मध्यान ही इसका सटीक उपाय है। भिक्षु साधना केंद्र, श्यामनगर में 'हृदयाघात कारण और निवारण' विषय पर आयोजित कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। मुनिश्री ने कहा कि - मोह सर्व समस्याओं का जनक और दुःख का मूल है। काम, क्रोध, अहंकार, ममकार, माया, लोभ, लालच, भय आदि सभी मोह का परिवार है। राग-

द्वेष मोह की पैदाइश है। इनकी प्रबलता से शारीरिक, मानसिक और भावात्मक स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

मुनि संभवकुमार जी ने कहा - मोह का उदय बंधन में डालता है और मोह विलय बंधन मुक्ति का मार्ग है। मोह उदय संसार है और उसका विलय संसार से सिद्धि का मार्ग है। आत्मा की उन्नति-अवनति का कारण मोह का उतार-चढ़ाव ही तो है।

चरित्र का हास और विकास क्रम भी मोह क्रम से जुड़ा हुआ है। नैतिक-अनैतिक आचरण में भी मोह की भूमिका है। प्रवचन का क्रम नमस्कार महामंत्र व तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी और सुविधिनाथ जी की स्तुति से हुआ। महाप्राण ध्वनि, कायोत्सर्ग व श्वास प्रेक्षा आदि के प्रयोग भी करवाए गए।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत जीवन विज्ञान दिवस मनाया गया

सूरत।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत आज जीवन विज्ञान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सिटीलाईट तेरापंथ भवन में उपस्थित भगवान महावीर युनिवर्सिटी परिवार को सम्बोधित करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या प्रोफेसर डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- जीवन विज्ञान शिक्षाजगत को प्रदत्त महत्त्वपूर्ण वरदान है। विद्यार्थी का जीवन तपस्वी का जीवन होता है। अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में उपस्थित सैकड़ों प्रतिभागियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए उन्होंने कहा- शारीरिक और बौद्धिक विकास हेतु सभी जागरूक रहते हैं पर

भावनात्मक और मानसिक विकास भी अपेक्षित है। इमोशनल कंट्रोल के बिना अनेक समस्याएं जन्म लेती हैं। भारतीय शिक्षा नीति की गूंज सर्वत्र है। बौद्धिकता के साथ मानवीय संवेदना जरूरी है। जीवन विज्ञान शिक्षा में अच्छे इंसान बनने के प्रेरणा दी जाती है। साध्वीश्रीजी ने कहा- भगवान महावीर की अहिंसा, मैत्री के सिद्धान्त को जीवन में उतारने का प्रयास होना चाहिए। आत्मविश्वास, सफलता का महत्त्वपूर्ण सोपान है। अतिविश्वास सफलता में बाधक बनता है। प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने विद्यार्थियों को ध्यान का प्रयोग करवाया और ड्रिंक्स, ड्रग्स के त्याग करवाए। साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने सकारात्मक सोच और संकल्प शक्ति को सफलता का राज बताया। साध्वी

सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी अतुल्यशशी एवं साध्वी डॉ चैतन्यप्रभाजी ने जीवनविज्ञान गीत का संगान किया।

भगवान महावीर युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार विजयजी मातावाला ने कहा- प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी का वक्तव्य और प्रेरणा आत्मविभोर करने वाला है। डीन ऑफ इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट से विनीत गोयल ने विचार रखे। अणुव्रत समिति ग्रेटर के अध्यक्ष रतनलालजी, अंकेश भाई शाह ने रजिस्ट्रार का स्वागत किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति की ओर से समागत रजिस्ट्रार महोदय एवं अतिथिगण का समान किया गया। समापन समारोह के अवसर अनेक महानुभावों की उपस्थिति रही। अणुव्रत समिति ग्रेटर के मंत्री अनिल चौरडिया ने आभार ज्ञापन किया।

संक्षिप्त खबर

सामूहिक ऊँ भिक्षु महाजप अनुष्ठान का आयोजन

गुवाहाटी। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा विश्व शांति के उद्देश्य से सामूहिक 'ऊँ भिक्षु' महाजप अनुष्ठान का आयोजन प्रातः 9 से 11 बजे तक किया गया। कार्यक्रम में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रबुद्ध सुशिष्य मुनि श्री डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी तथा मुनि श्री रमेश कुमार जी आदि ठाणा-4 का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती सुशीला मालू ने की, जबकि संचालन एवं व्यवस्था में मंत्री श्रीमती सुचित्रा छाजेड़ की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की परामर्शक श्रीमती रंजू खटेड़ तथा कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती सुनीता गुजरानी की गरिमामयी उपस्थिति रही। इसके अतिरिक्त संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों, गणमान्य व्यक्तियों एवं तेरापंथ समाज के सदस्यों की appreciable सहभागिता से कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। आचार्य श्री भिक्षु जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित इस आध्यात्मिक आयोजन के दौरान 'ऊँ भिक्षु' मंत्रोच्चारण से धर्मस्थल का संपूर्ण वातावरण भक्तिमय एवं गुंजायमान हो उठा।

प्रेक्षावाहिनी की प्रथम कार्यशाला

नोखा। 'योगसाधिका' साध्वी राजीमती जी ने प्रेक्षाध्यान, महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाते हुए कहा - व्यक्ति बाहर भटकता है। राग, द्वेष, ईर्ष्या, कलह का जीवन ज्यादा जीता है। आवश्यकता है अपने आप को देखें। श्वास कैसे आता है उसको देखें। शांत रहे। प्रतिदिन ध्यान का अभ्यास करने से व्यक्ति में अंदर व बाहर की क्षमता बढ़ती है। स्थूल शरीर से सूक्ष्मता की ओर जाना ही प्रेक्षाध्यान है। भावना मरोठी ने यौगिक क्रियाओं के प्रयोग करवाते हुए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। महिला मंडल अध्यक्ष प्रीति मरोठी ने बताया कि प्रेक्षावाहिनी कार्यशाला का जन-जन को लाभ मिले इसलिए प्रति माह प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण दिया जाएगा। साध्वी प्रभातप्रभा जी ने कहा- प्रेक्षाध्यान क्या है इसके बारे में समझाया। भगवान महावीर ने भी अपने जीवन में ध्यान की साधना की। विभिन्न रोगों का इलाज प्रेक्षाध्यान के द्वारा संभव है त्रिपदी वंदना, और महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाए। इस कार्यशाला में सभा अध्यक्ष शुभकरण चौरडिया, मंत्री मनोज घीया, उपाध्यक्ष लाभचंद छाजेड़, कवि इंंदरचंद बैद, बच्छराज पारख, अनुराग बैद, सुशील भूरा, श्रीमती मंजु बैद, विभा आंचलिया, धारा लूणावत, मोनिका बैद, पुष्पादेवी पारख, युवक आदि उपस्थित रहे।

नवपद ओली तप सानंद हुआ सम्पन्न

जसोल।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी रतिप्रभा जी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में एवं मंडल अध्यक्ष ममता मेहता की अध्यक्षता

में नवपद ओली तप सानंद सम्पन्न हुआ। साध्वीश्री के अथक प्रयास एवं प्रेरणा से जसोल तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 30 से ज्यादा बहनों ने नौ दिन नीवि तप, 2 बहनों आयम्बिल की पूरी ओली, 2 बहनों ने 15 एकासन, पूनम के दिन 10 बहनों ने घर पर

और 22 बहनों, 3 भाइयों ने भवन में सामूहिक आयम्बिल किए।

अध्यक्ष ममता मेहता ने प्रायोजक बहन कमलादेवी बोकाडिया का आभार ज्ञापन किया और आगे भी इसी तरह से प्रायोजक परिवार लाभार्थी होने के लिए अन्य बहनों को प्रेरणा दी।

उजाला-परंपरा कार्यशाला का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पुण्यशशी जी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा वृहद् बेंगलुरु स्तरीय उजाला कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका विषय था- परंपरा और प्रगति में संतुलन।

साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार मंत्र एवं ॐ भिक्षु जय भिक्षु के जप से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। मंडल की बहनों द्वारा सुंदर मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष मंजु बोथरा ने आगंतुकों का भावभरा स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए विषय पर अपने विचार रखे। प्रेरणा गीत का संगान सभी शाखा मंडलों की प्रतिनिधि बहनों द्वारा किया गया। सभा अध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने अपने विचार रखे। साध्वी बोधिप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि परंपरा कभी बंधन नहीं होती। रूढ़िवाद को छोड़कर आत्मविश्वास के साथ जब महिलाएं कार्य

करती हैं तो वह हर क्षेत्र में आगे बढ़ सकती हैं। साध्वी श्री वर्धमानयशशी जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। आज की इस विशिष्ट कार्यशाला के मुख्य वक्ता रहे चेन्नई से पधारे अन्तर्राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री राकेश जी खटेड़। उन्होंने अपने प्रभावशाली वक्तव्य में कहा की परंपरा कभी रूढ़िवाद नहीं होनी चाहिए। जो परंपराएं गलत हैं उन्हें बढ़ावा नहीं देना चाहिए और जो सही हैं उन्हें समझ कर आगे बढ़ना चाहिए। सही परंपराओं को आगे बढ़ाना है तो उनकी जिज्ञासाओं का समाधान देना होगा। इस प्रकार दिए हुए संस्कार ही परंपराओं की नींव को सुदृढ़ बनती हैं और प्रगति की सूचक हैं। उन्होंने कहा कि अच्छी परंपराओं को रूढ़ि समझ कर उन्हें छोड़ना नहीं है। विवाह, खानपान, पहनावे में पारंपरिक आस्था को वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया। साध्वी श्री पुण्यशशीजी ने बाहर के उजाले के साथ अंदर के उजाले की बात रखी

तथा कहा कि उजाला उन्नति, विकास व संस्कृति का प्रतीक है। प्रेम, वात्सल्य, विनय के साथ हमारी ऊर्जा शक्ति और क्षमता को परिवारिक स्तर पर अपनाएं। संस्कृति का आधार मां-बाप है। संस्कृति परिवार से बनती है। संस्कारों को पहले हम स्वयं जिएं फिर बच्चों पर लागू करें। उजाला सूर्योदय के अगवानी में आता है। उजाला हमारी सुगती के संदेश का प्रतीक है। अभातेमम की सहमंत्री श्रीमती मधु कटारिया ने केन्द्र की आगामी गतिविधियों की जानकारी दी तथा बेंगलुरु की सभी शाखा मंडलों का वर्ष में एक कार्यक्रम एक साथ करने की बात रखी। आज की कार्यशाला के प्रायोजक हनुमानमल जी संजय बैद परिवार से प्रेम बैद का सम्मान किया गया। मुख्य वक्ता राकेश खटेड़ का सम्मान किया गया। गांधीनगर, विजयनगर, राजाजीनगर, हनुमंतनगर, यशवन्तपुर, टी. दासरहल्ली क्षेत्रों से अध्यक्ष बहनें अपनी टीम सहित पधारीं।

फ्यूजन एडिशन-10 का हुआ आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम हैदराबाद द्वारा फ्यूजन एडिशन-10 का आयोजन डॉ.साध्वी गवेषणाश्री जी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में व राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोट की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन, डी.वी. कॉलोनी में हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत राकेश कठोटिया व टीम टीपीएफ द्वारा मंगलाचरण से हुई। टीपीएफ हैदराबाद अध्यक्ष विरेन्द्र घोषल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष व उनकी टीम से पधारे हुए सभी महानुभावों का स्वागत किया व साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। डॉ. साध्वी गवेषणाश्री जी ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया की टीपीएफ ने वर्तमान समय की आवश्यकता को देखते हुए फ्यूजन एडिशन-10 के अंतर्गत यह नवोन्मेष वेदिका कार्यक्रम

आयोजित किया है। साध्वीश्री ने परिवार नियोजन, समय नियोजन व आर्थिक नियोजन वर्तमान समय में कैसे करना है इसके बारे में विशेष जानकारी प्रदान की। साध्वी मेरुप्रभा जी, मयंकप्रभा जी व दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने अपने प्रभावी वक्तव्य से परिवार में आनंदमय वातावरण कैसे बनाया जा सकता है इसे कुछ सरल उदाहरणों के माध्यम समझाया। राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोट ने टीपीएफ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा 16 वर्ष पूर्व टीपीएफ की स्थापना की गई थी। आज देशभर में टीपीएफ के 11000 से अधिक सदस्य हैं। टीपीएफ अध्यात्म, स्वास्थ्य, इंटेलिक्चुअल, नेटवर्किंग व शिक्षा के क्षेत्र में विशेष कार्य करती हैं। कोई भी

तेरापंथी बालक शिक्षा से वंचित ना रहे इसके लिए टीपीएफ प्रति वर्ष शिक्षा फीस में सहयोग प्रदान करती हैं। हेल्थ कैम्प आयोजित करती है व और भी कई कार्य समाज हित हेतु टीपीएफ द्वारा किए जाते हैं। उन्होंने टीपीएफ हैदराबाद को पिछले 10 वर्षों से लगातार fusion कार्यक्रम आयोजन किए जाने के लिए साधुवाद दिया। कार्यक्रम में टीम फेमिना से वर्षा, श्वेता व पूजा ने मनमोहक प्रस्तुति दी। राष्ट्रीय महामंत्री मनीष कोठारी ने ऑनलाइन शुभकामनाएँ दीं।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नरेश कठोटिया ने टीपीएफ की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। राष्ट्रीय संयुक्त सचिव मोहित बैद ने टीपीएफ शाइन के बारे में जानकारी दी। साउथ जोन अध्यक्ष विक्रम कोठारी ने टीपीएफ हैदराबाद को कार्यक्रम के आयोजन के लिए शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने बताया कि

दक्षिण क्षेत्र की सभी परिषदों के सहयोग से दक्षिण क्षेत्र इस वर्ष प्रथम आया है, जिसकी घोषणा राष्ट्रीय अधिवेशन में की गई।

AMKC चेयरपर्सन वंदना जी डांगी ने आचार्य महाप्रज्ञ नालेज सेंटर परियोजना के बारे में जानकारी दी। राष्ट्रीय टीम सदस्य अभय चंडालिया ने नेटवर्किंग के बारे में जानकारी दी। सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने सभी संस्थाओं की ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित की। आज के इस fusion edition10 के प्रथम मुख्य वक्ता अजय जी जैन ने startup के बारे में विशेष जानकारी प्रदान की व द्वितीय मुख्य वक्ता सूर्य प्रभा ने artificial intelligence के बारे में विशेष जानकारी प्रदान की। राष्ट्रीय टीम सदस्य दीपक संचेती, रिषभ दुगड़, नवीन सुराणा, आईपीपी हैदराबाद पंकज संचेती, सभा अध्यक्ष

सुशील संचेती, महिला मंडल मंत्री निशा सेठिया, तेयुप अध्यक्ष राहुल गोलछा, JTN प्रभारी मिनाक्षी सुराणा, TPF हैदराबाद उपाध्यक्ष सुनील पगारिया, वर्षा बैद, निखिल कोटेचा आदि गणमान्य व्यक्तियों व टीपीएफ सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय सहमंत्री मोहित बैद, निवर्तमान अध्यक्ष पंकज संचेती व जयंती गोलछा ने विशेष सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम के संयोजक उपाध्यक्ष निखिल कोटेचा, उपाध्यक्ष वर्षा बैद, उपाध्यक्ष सुनील पगारिया, हितेश बोथरा, पीयूष भूतोडिया, वर्षा दुगड़, डॉ. श्वेता मेहता, पुनीत दुगड़, गौरव भूतोडिया आदि की अच्छी मेहनत से कार्यक्रम सफलतम हुआ। कार्यक्रम का सफल संचालन उपाध्यक्ष वर्षा बैद व डॉ. श्वेता मेहता ने किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष निखिल कोटेचा ने किया।

अशांत मनुष्य को शांति का मार्ग दिखाता है अणुव्रत

बीकानेर।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी व अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के शुभ आशीर्वाचनों एवं अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशानुसार युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी के 112वें जन्मोत्सव पर अणुव्रत दिवस के उपलक्ष में तुलसी साधना केन्द्र, दुगड़ भवन, रामपुरिया मौहल्ला, बीकानेर के प्रांगण में 'शासनश्री' साध्वी मंजुप्रभाजी व 'शासनश्री' साध्वी कुंथूश्रीजी एवं साध्वी वृन्द के सान्निध्य में श्रावक व श्राविकाओं की उपस्थिति में एक अति विचारपूर्ण संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ बीकानेर महिला मंडल की मंत्री श्रीमती रेणुकाजी बोथरा ने आचार्य श्री तुलसी के जन्मोत्सव पर भावपूर्ण गीतिका की प्रस्तुति से हुआ। महिला मण्डल बीकानेर की संयोजिका श्रीमती शान्ताजी भूरा ने अपने संबोधन में बताया कि गुरुदेव तुलसी ने महिलाओं के लिए अनगिनत अवदानों से उपकृत कर उनके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन लाने का कार्य किया। नया मोड़ का अवदान देकर पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, मृत्युभोज, सती प्रथा आदि अनेक कुरीतियों को हटाने का प्रयास

किया। अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात करके मानव जीवन में उच्च संस्कारों को अपनाने हेतु प्रेरित किया। अणुव्रत समिति, बीकानेर के पूर्व अध्यक्ष श्री इन्द्रचन्द सेठिया ने अपने सम्बोधन में कहा कि यह दिवस केवल उनके स्मरण का दिन नहीं है बल्कि एक प्रेरणा दिवस है जिसे हम अणुव्रत दिवस के रूप में मना रहे हैं। आचार्य श्री तुलसी ने यह प्रेरणा दी कि सच्चा धर्म बाह्य आडम्बरों में नहीं बल्कि आत्म संयम, नैतिकता व प्रेमपूर्ण जीवन में बसता है। वर्तमान अध्यक्ष श्री इंवरलाल गोलछा ने अपने सम्बोधन में बताया कि आचार्य श्री तुलसी द्वारा संकलित गीत 'संयममय जीवन हो' में अणुव्रत आन्दोलन की समस्त परिभाषाएँ परिलक्षित हैं। साध्वीवृन्द ने अणुव्रत आन्दोलन की गीतिका के माध्यम से सुन्दर प्रस्तुतिकरण किया। 'शासनश्री' साध्वी कुंथूश्रीजी ने अपने उद्बोधन में बताया कि चारित्रिक विकास का नाम ही अणुव्रत है। अणुव्रत एक संजीवनी है।

यह मुर्छित मानवता में नव संचार करता है। अणुव्रत एक राजमार्ग है जो भटकते हुए को सही पथ पर लाता है। अणुव्रत मानव समाज के लिए एक सुरक्षा कवच है। कार्यक्रम का समापन 'शासनश्री' साध्वी कुंथूश्रीजी ने मंगल पाठ के द्वारा हुआ।

अभिनंदन एवं सम्मान समारोह आयोजित

मैसूर।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, मैसूर द्वारा ऐरावत डेस्टिनेशन वेन्यू में आयोजित मैसूर एवं मैसूर क्षेत्रीय दीपावली स्नेह मिलन समारोह में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट का भव्य अभिनंदन एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नवकार महामंत्र के साथ हुआ। तेयुप मैसूर अध्यक्ष श्री प्रमोद मुणोत ने स्वागत वक्तव्य एवं अतिथि परिचय प्रस्तुत किया। तत्पश्चात सभा अध्यक्ष एवं तेयुप अध्यक्ष द्वारा अभिनंदन पत्र भेंट कर नवनिर्वाचित अभातेयुप अध्यक्ष श्री पवन मांडोट का

सम्मान किया गया। अभातेयुप अध्यक्ष श्री मांडोट ने अपने संबोधन में किशोर मंडल विजयनगर से लेकर अभातेयुप अध्यक्ष के पद तक की अपनी प्रेरणादायक यात्रा साझा की।

उन्होंने बताया कि किस प्रकार एक छोटा सा कार्यकर्ता धर्मसंघ के प्रति समर्पित रहकर ऊँचाइयों तक पहुँच सकता है। आपने आगामी गुरुदेव के 51 दिवसीय कंटालिया से लांडनू तक के विहार मार्ग की सेवा यात्रा की जानकारी भी दी। मैसूर परिषद को 59वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'एकत्व' में MBDD हेतु प्राप्त तीन पुरस्कारों के लिए आपने हार्दिक शुभकामनाएँ दीं तथा आगामी अधिवेशन में मैसूर परिषद सर्वश्रेष्ठ परिषद बनने की मंगलकामनाएँ प्रेषित कीं। इस अवसर पर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद से विनोद जी मुथा, गौतम जी खाय्या, आलोक जी छाजेड़, एवं मुकेश जी गुगलिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभा एवं तेयुप द्वारा अतिथियों का जैन दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया।

मैसूर एवं मैसूर क्षेत्र के दीपावली स्नेह मिलन समारोह में तेरापंथ समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति, श्रावक एवं श्राविका समाज की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन सुनील जी देरासरिया द्वारा किया गया तथा अंत में उन्होंने सभी का आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष व आपकी अभातेयुप टीम ने मैसूर में विराजित साध्वी सिद्धप्रभा जी आदि ठाणा -4 के दर्शन सेवा का लाभ लिया।

गूगल बाबा गुरु नहीं है, ज्ञान गुरु से ही लेना चाहिए

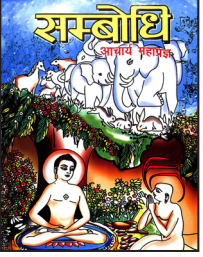
जयपुर।

आज दुनिया में ज्ञान प्राप्ति के अनेक साधन उपलब्ध हो गए हैं। गूगल, एआई, चैट जीपीटी आदि कई माध्यमों से आदमी जानकारी प्राप्त कर रहा है। वैज्ञानिक युग के यह साधन सुविधा के साथ दुविधा भी पैदा कर रहे हैं। जो ज्ञान गुरु अथवा अनुभवी से मिल सकता है वह ज्ञान गूगल बाबा से नहीं मिल सकता। अतः ज्ञान गुरु

से ही लेना चाहिए, गूगल बाबा गुरु नहीं है। ये विचार मुनि तत्त्वचि जी 'तरुण' ने सोमवार को भिक्षु साधना केंद्र, श्यामनगर में 'गूगल बनाम गुरु' विषय पर प्रवचन देते हुए व्यक्त किये। मुनिश्री ने गुरु की महत्ता उजागर करते हुए कहा - जिसके जीवन में गुरु नहीं, उसका जीवन भी शुरू नहीं है। गुरु बिना जीवन में अंधेरा है। अज्ञान का अंधकार गुरु ही मिटा सकते हैं। इस अवसर पर मुनि संभवकुमार

जी ने कहा - दुनिया में जो कार्य गुरु कर सकते हैं, वह दूसरा कोई नहीं कर सकता। उन्होंने कहा - गुरु द्वारा प्राप्त ज्ञान से आदमी स्वतंत्र बनता है। जबकि गूगल तो आदमी को परतंत्र बनाता है। आत्मनिर्भरता गुरु ज्ञान से आती है। गूगल के प्रयोग से व्यक्ति परावलंबी बनता है। प्रवचन से पूर्व प्रातः कालीन प्रार्थना के पश्चात आसन, प्राणायाम एवं ध्यान साधना के कार्यक्रम हुए।

संबोधि

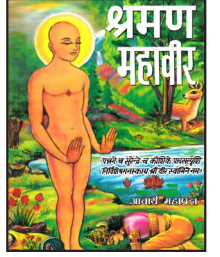


मनः प्रसाद



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ-

श्रमण महावीर

क्रान्ति का
सिंहनाद

उपसंहार

यह मेघ को दिया गया भगवान् महावीर का प्रतिबोध जन-जन के लिए प्रतिबोध है। मोह-विजय, अज्ञान-विजय और आत्मानुशासन की साधना है।

जिसका मोह विलय होता है वह संबुद्ध है। 'संबोधि' की उपासना कर अनेक आत्माएं मेघ बन गईं और अनेक बनेंगी। आत्मा का शुद्ध स्वरूप सच्चिदानंद है। वह आत्मोपासना से प्रबुद्ध होता है। मोह और अज्ञान आत्मोत्तर हैं। इनके भंवर से वही निकल सकता है जो 'संबोधि' को आत्मसात् करता है। 'संबोधि' का संक्षेप रूप है-सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान और सम्यग् चरित्र। यही आत्मा है। जो आत्मा में अवस्थित है वह इस त्रिवेणी में स्थित है और जो त्रिवेणी की साधना में संलग्न है वह आत्मा में संलग्न है।

आत्मा की अविकृत और विकृत दशा की यहां विस्तृत चर्चा है। विकृत से अविकृत बनाना 'संबोधि' का ध्येय है। जो धर्ममूढ़ता या आत्ममूढ़ता है वह मोह है। मोह का विलय मुक्ति है। मोह-विलय से दृष्टि-शुद्धि, ज्ञान-शुद्धि और आचार-शुद्धि होती है। प्रत्येक व्यक्ति इस विशुद्धि का अधिकारी है किन्तु वह सर्वश्रेष्ठ अधिकारी है जिसकी मोह-विजय में पूर्ण आस्था है। क्षेत्र, काल, प्रान्त आदि की सीमाएं आस्थावान् के लिए व्यवधान नहीं बन सकतीं। यह सबकी बपौती है। 'संबोधि' आस्था को जगाती है और व्यक्ति को आस्थावान् बनाती है, आत्मा की स्व में अटूट आस्था को प्रबल कर वह कृतकृत्य हो जाती है।

प्रशस्ति:

तवैवालोकोऽयं प्रसूत इह शब्देषु सततं
तवैषा पुण्यागीरमलतमभावानुपगता ।
प्रभो ! शब्दैरर्चामकृषि सुलभैः संस्कृतमयै-
स्तदेषाडालोकाय प्रभवतु जनानां सुमनसाम् ॥१॥
दीपावल्याः पावने पर्वणीह
निर्वाणस्यानुत्तरे वासरेऽस्मिन् ।
निर्ग्रन्थानां स्वामिनो ज्ञातसूनो-
रर्चा कृत्वा मोदते नत्थमल्लः ॥२॥
विक्रम द्विसहस्राब्दे, पावने षोडशोत्तरे ।
कलकत्ता-महापुर्यां सम्बोधिश्च प्रपूरिता ॥३॥
आचार्यवर्यतुलसीचरणाम्बुजेषु
वृत्तिं व्रजन् मधुकृतो मधुरामगम्याम् ।
'भिक्षोरनन्त सुकृतोन्नत-शासनेऽस्मिन्,
मोदे प्रकाशमतुलं प्रसजन्मोघम् ॥४॥

(क्रमशः)

एक संस्कृत श्लोक उनका प्रबल प्रतिनिधित्व करता है-

जिते च लभ्यते लक्ष्मीः, मृते चापि सुरांगना ।
क्षणभंगुरको देहः, का चिन्ता मरणे रणे ॥

— विजय होने पर लक्ष्मी मिलती है, मर जाने पर देवांगना। यह शरीर क्षणभंगुर है, फिर समरांगण में मौत की क्या चिन्ता ?

ऐसी प्रशस्तियों से युद्ध को लौकिक और अलौकिक-दोनों प्रतिष्ठाएं प्राप्त हो रही थीं। कुछ धर्म-संस्थाएं भी उसका समर्थन कर रही थीं। उसके विरोध में आवाज उठाने का अर्थ था-अपनी लोकप्रियता को चुनौती देना। उस परिस्थिति में महावीर ने उसका तीव्र विरोध किया। वह विरोध भौतिक हितों के सन्दर्भ में हो रहे युद्ध के समर्थन का विरोध था। वह विरोध समग्र मानवता के हितों के संदर्भ होने वाला विरोध था। वह विरोध शस्त्र से संरक्षित भीरुता का विरोध था। वह विरोध दूसरे राष्ट्र के नागरिकों की चिताओं पर खड़ी की जाने वाली अट्टालिकाओं का विरोध था। वह विरोध कायरता को संरक्षण देने वाला विरोध नहीं था। सच तो यह है कि भगवान् के विरोध की दिशा युद्ध नहीं, अनाक्रमण था। भगवान् जनता को और राष्ट्र को अनाक्रमण का संकल्प दे रहे थे। अनाक्रमण का अर्थ है-युद्ध का न होना। एक आक्रमण करे और दूसरा उसे चुपचाप सहे, वह या तो साधु हो सकता है या कायर। भगवान् जानते थे कि समूचा समाज साधुत्व की दीक्षा से दीक्षित नहीं हो सकता और भगवान् नहीं देना चाहते थे समाज को कायरता और कर्तव्य-विमुखता का अनुदान। आक्रमण होने पर प्रत्याक्रमण करने का वर्जन कैसे किया जा सकता था? किया जा सकता था आक्रमण के अहिंसक प्रतिरोध का विधान। उस युग में इस मनोभूमिका का निर्माण नहीं हो पाया था।

भगवान् व्यवहार की भूमिका के औचित्य को समझते थे। इसलिए उन्होंने जनता को प्रत्याक्रमण का निषेध नहीं दिया और नहीं दिया कर्तव्य के अतिक्रमण का सन्देश। भगवान् प्रत्याक्रमण में भी अहिंसा का दृष्टिकोण बनाए रखने का संकल्प देते थे। हिंसा की अनिवार्यता आ जाने पर भी करुणा की स्मृति का संकल्प देते थे।

वरुण भगवान् महावीर का उपासक था। उसने अनाक्रमण का संकल्प स्वीकार किया था।

सम्राट कोणिक ने वैशाली १२, पर आक्रमण किया। वरुण को रणभूमि में जाने का आदेश हुआ। वह गणतंत्र के सेनानी का आदेश पाकर रणभूमि में गया। चम्पा का एक सैनिक उसके सामने आकर बोला-ओ वैशाली के योद्धा! क्या देखते हो? प्रहार करो न! वरुण ने कहा- 'प्रहार न करने वाले पर मैं प्रहार नहीं कर सकता और एक दिन मैं एक बार से अधिक प्रहार नहीं कर सकता।' चम्पा का सैनिक उसकी बात सुन तमतमा उठा। उसने पूरी शक्ति लगाकर बाण फेंका। वरुण का शरीर आहत हो गया।

वरुण कुशल धनुर्धर था। उसका निशाना अचूक था। उसने धनुष को कानों तक खींचकर बाण चलाया। चम्पा का सैनिक एक ही प्रहार से मौत के मुंह में चला गया।

महाराज चेटक भी प्रहार न करने वाले पर प्रहार और एक दिन मैं एक बार से अधिक प्रहार नहीं करते थे। यह था प्रत्याक्रमण में अहिंसा का विवेक। यह थी हिंसा की अनिवार्यता और अहिंसा की स्मृति।

महाराज चेटक अहिंसा के व्रती थे। अनाक्रमण का सिद्धांत उन्हें मान्य था। उनकी साम्राज्य-विस्तार की भावना मानवीय कल्याण की धारा में समाप्त हो चुकी थी। फिर भी वे अपने सामाजिक दायित्व के प्रति सजग थे। एक बार महारानी पद्मावती ने कोणिक से कहा- 'राज्य का आनन्द तो वेहल्लकुमार लूट रहा है। आप तो नाम भर के राजा हैं।' कोणिक ने इसका हेतु जानना चाहा। महारानी ने कहा- 'वेहल्लकुमार के पास सचेतक गंधहस्ती और अठारहसरा हार है। राज्य के दोनों उत्कृष्ट रत्न हमारे अधिकार में नहीं हैं, फिर राजा होने का क्या अर्थ है?'

महारानी का तर्कबाण अमोघ था। कोणिक का हृदय विध्वनित हुआ। उसने वेहल्लकुमार से हार और हाथी की मांग की। वेहल्लकुमार ने कहा- 'स्वामिन् ! सम्राट श्रेणिक ने अपने जीवनकाल में हार और हाथी मुझे दिए थे, इसलिए ये मेरी निजी सम्पदा के अभिन्न अंग हैं। आप मुझे आधा राज्य दें तो मैं आपको हार और हाथी दे सकता हूँ।' कोणिक ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

कोणिक मेरे हार और हाथी पर बलात् अधिकार कर लेगा, इस आशंका से अभिभूत वेहल्लकुमार ने महाराज चेटक के पास चले जाने की गुप्त योजना बनाई। अवसर पाकर अपनी सारी सम्पदा के साथ वह वैशाली चला गया।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री मानकंवरजी (किशनगढ़) दीक्षा क्रमांक 195

साध्वीश्री ने अनेक तपस्याएं की पर विवरण उपलब्ध नहीं है। अपने चार वर्ष के संयम पर्याय के अंत में 21 दिन का अनशन आया। जिसमें 19 दिन की चौविहार अनशन था जो संघ में तब तक प्रथम अवसर था।

- साभार : शासन समुद्र -

धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण

समाज-सुधार के सूत्रधार :
गुरुदेव श्री तुलसी



ठाकुर साहब ने कहा- घरवाली भी आ रही है। गुरुदेव ने देखा, कुछ दूर गेडिया के सहारे मंथर गति से चलती हुई ठकुरानीजी आ रही हैं। आचार्यश्री ने सामने पधारकर दर्शन दिए। ठकुरानीजी का रोम-रोम पुलकित हो उठा। आचार्यश्री पुनः अपनी पादवीथिका की ओर बढ़े ! लोगों ने कहा-कांटे बहुत हैं। आचार्यश्री ने टोकते हुए कहा- कांटे नहीं देखे जाते, भक्ति देखी जाती है।

मदिरा का उन्मूलन

१७ मार्च १९८५ (लगभग) की प्रातःकालीन वेला। छोटा-सा ग्राम कांकरोद। आचार्यवर ने अपने प्रवचन के दौरान व्यसनमुक्ति के लिए लोगों को आह्वान किया। एक-एक कर लोग खड़े होकर शराब, मांस, धूम्रपान आदि का प्रत्याख्यान करने लगे। स्थानीय सरपंच और जागीरदार भी नियमबद्ध बन गए। देखते-देखते लगभग सारा गांव मदिरा-मुक्त बन गया।

संघर्ष का संहार

१६ मार्च १९८५ को आचार्य प्रवर भीम पधारे। यहां के लोगों में कुछ मुद्दों को लेकर आपस में तनाव था। लोगों ने विवाद को विनष्ट करने के लिए काफी प्रयास किया पर सारा प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुआ। आचार्यवर ने दोनों पक्षों की बातें सुनीं। दूसरे दिन गुरुदेव ने बड़ाखेड़ा की ओर प्रस्थान करते हुए कहा-हम कल पुनः यहां आएंगे, उससे पहले यह विवाद समाप्त हो जाना चाहिए। लोगों ने गुरुदेव के संकेत को गहराई से स्वीकार किया। अथक प्रयास करके रात्रि में विवाद को समाप्त कर सारे लोग एकमत हो गए। २२ मार्च को सवेरे लोगों ने दर्शन कर आचार्यवर को विवाद-समाप्ति की सूचना दी। जहां आचार्यवर का पदार्पण होता है, वहां के संघर्ष हर्ष में परिणत हो जाते हैं।

आग्रह का त्याग

२० मार्च १९८५ को आचार्यवर बड़ाखेड़ा पधारे। यहां के समाज में पिछले कई वर्षों से तड़ (दो पक्ष) बने हुए थे। इसका कारण था-यहां के एक तेरापंथी भाई ने अपना मकान समाज को उपहृत किया था। उस भाई की मृत्यु के बाद भवन को लेकर भारी तनाव बढ़ गया। कुछ लोग उस मकान को जैन-भवन के रूप में बनाना चाहते थे और कुछ लोग सभा-भवन के रूप में। बात इतनी बढ़ गई कि दो पक्ष बन गए। पार्श्ववर्ती ग्राम बराखण और आसण में भी इस मुद्दे को लेकर दो पक्ष बन गए। इन गांवों की पंचायत एक है। बीच-बीच में कुछ लोगों ने विवाद-समाप्ति के प्रयास भी किए पर सफलता नहीं मिली।

किसी भाई ने आचार्य प्रवर को अवगत करवाया कि यहां दो पक्ष हैं। आचार्यश्री ने भी अपने प्रथम प्रवचन में ही लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया। कुछ लोग प्रयास में जुटे। आसण और बराखण के लोग भी उपस्थित हो गए। सब लोग मान गए पर श्री मोहनलाल आच्छा नहीं मान रहे थे। वे अपने पक्ष को सही साबित करने के लिए आग्रही बने हुए थे। आचार्यवर ने फरमाया मोहनलाल! आग्रह छोड़ दो।

मोहनलाल-गुरुदेव! आपके प्रति मेरे मन में पूर्ण श्रद्धा है। मेरे रोम-रोम में बस आप रमे हुए हैं। आप कहो तो मैं धूप में खड़ा-खड़ा सूख जाऊं पर यह बात तो नहीं मानूंगा।

लोगों ने कहा- मोहनलाल ! अकेले रह जाओगे।

मोहनलाल- भले रह जाऊं पर बात नहीं छोड़ूंगा।

सभा विसर्जित हुई। देवगढ़ निवासी श्री जुगराज जी आदि लोगों ने मोहनलाल को समझाया, फलस्वरूप उन्होंने अपना आग्रह छोड़ दिया। रात्रि में पुनः सभी लोग एकत्रित हुए। पहले लिखे हुए अभिलेखों को गुरुदेव के समक्ष रद्द कर सब एक मत हो गए।

साधना का शिखर

चाखेड-६-६-८४

परमाराध्य आचार्यवर श्री तुलसी एवं युवाचार्यवर श्री महाप्रज्ञ पास-पास विराजमान थे। दोनों महापुरुषों के सम्मुख विद्यार्थी साधु-साध्वियों का समुदाय उपासीन था। आचार्यचरण के सान्निध्य में भगवती सूत्र का वाचन चल रहा था। वाचन के दौरान प्रसंगवश आचार्यवर ने अपने जीवन का एक संस्मरण सुनाया। यह संस्मरण उस समय का है जब पारमार्थिक शिक्षण संस्था की बहिनें आचार्यवर के साथ पदयात्रा किया करती थीं।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र



तेरापंथ टाइम्स

की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड
स्कैन करें या आवेदन करें
<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु

abtyppt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002
पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

दिसम्बर 2025

सप्ताह के विशेष दिन

01 दिसम्बर

भगवान अरनाथ दीक्षा,
भगवान मल्लिनाथ जन्म
एवं केवलज्ञान, भगवान
नमिनाथ केवलज्ञान

04 दिसम्बर

भगवान संभवनाथ
जन्म, भगवान
संभवनाथ दीक्षा एवं
पक्खी

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री पांचीरामजी (मोमासर) दीक्षा क्रमांक 437

मुनिश्री तपस्या के क्षेत्र में उत्तरोत्तर आगे बढ़ते गए। आपने सं 2027 से 5 वर्ष एकान्तर और सं 2032 से एक वर्ष बेले-बेले तप किया। तप के साथ 2027 से आजीवन मौन व्रत स्वीकार किया। इस प्रकार लगभग 6 वर्ष तपस्या के साथ मौन तप की समग्र तालिका इस प्रकार है- उपवास/2483, बेला/140, 3/31, 4/6, 5/5, 8/1।

कुल दिन 2913 जिनके 8 वर्ष 1 महीना 3 दिन होते हैं। अन्त में मुनिश्री 6 दिन संलेखना तप, 18 दिन तिविहार अनशन 9 दिन चौविहार अनशन कुल 33 दिन के तप अनशन से दिवंगत हुए।

- साभार : शासन समुद्र -

संक्षिप्त खबर

युवा शक्ति समाज और राष्ट्र की रीढ़

सिरियारी। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के नव मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट का आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी में आगमन पर संस्थान द्वारा स्वागत अभिनंदन किया गया। तत्पश्चात् मुनि धर्मेशकुमार जी की सन्निधि में पूरी टीम के साथ कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा-जोश, ऊर्जा और शक्ति से भरपूर आज की युवाशक्ति समाज और राष्ट्र की रीढ़ है। जो आज के मानदंडों को बदलने में सक्षम है। इसमें कुछ कर गुजरने का मादा है। कुछ बनाना और मिटाना तो मानों इनके हाथों का खेल है। युवा वह कार्यकर्ता है जिसके चिन्तन निर्णय और क्रियान्विति में दूरी नहीं होती। गुरु के एक इशारे पर मर मिटना और धर्मसंघ की सेवा में हर पल तैयार रहते हैं। ऐसे युवा कार्यकर्ता पर धर्मसंघ को नाज होता है। मुनि धर्मेशकुमारजी ने भी युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा युवापीढ़ी जीवन में सदैव संतुलन बनाए रखने का प्रयास करें। यह अवस्था सबसे ज्यादा उन्नति, कार्य करके विकास मार्ग को प्रशस्त कर लेती है। सामाजिक कार्यों के साथ आध्यात्मिक धार्मिक कार्यों को संचालित करती रहे। जैन शासन तेरापंथ व मानवता सेवा करती रहे जिससे समाज को एक नया संदेश मिलता रहेगा। इस अवसर पर नव मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन मांडोट, उपाध्यक्ष अनंत बागरेचा, अभिनंदन नाहटा, महामंत्री सौरभ पटावरी, सहमंत्री पवन नौलखा, अंकुर लूणिया, कोषाध्यक्ष विकास बोथरा संगठन मंत्री रोहित कोठारी, कार्यसमिति सदस्य रोशन नाहर तेयुप साथी मुकेश ओस्तवाल का संस्थान द्वारा व्यवस्थापक महावीरसिंह, बसंतकुमार, डॉ. बी. आर. शर्मा आदि ने संस्थान की ओर से मोमेन्टों दुपट्टा और साहित्य से सम्मानित किया। पाली से रोशन नाहर जैन तेरापंथ न्यूज के प्रमारी मौजूद थे।

जप सामूहिक रूप से आयोजित

मदुरै। अखिल भारतीय महिला मंडल के निर्देशानुसार पूरे भारत वर्ष में भिक्षु स्वामी का जप हो रहा है। तमिलनाडु के क्षेत्र के मदुरई में भी मुनि हिमांशु कुमार जी ठाणा 2 के सान्निध्य में दोपहर तीन से चार बजे जप रखा गया था, जिसमें एरिया वाइज सभी जगह जप हुआ जप न केवल सामूहिक रूप से आयोजित स्थानों पर हुआ, बल्कि हर एरिया में अपने-अपने घरों में भी हुआ। इसमें ज्ञानशाला के बच्चे, युवक परिषद, कन्या मंडल और सभा के सदस्य भी जुड़े। सभी ने उत्साहपूर्वक ओम भिक्षु की ध्वनि में जप किया। कुल-98 सदस्यों ने इसमें भाग लिया। अंत में, मुनि श्री जी ने प्रेरणा देते हुए कहा कि अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम बहुत ही प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि महिला मंडल इसी तरह नए-नए आयामों को छुए और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाए। उक्त जानकारी तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा दीपिका फुलफगर एवं सभा निवर्तमान अध्यक्ष अशोक कुमार जीरावला ने दी।

प्रतियोगिता का आयोजन

यशवंतपुर। सभा भवन में आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सोमयश जी के सान्निध्य में 'भिक्षु म्हारे प्रगटिया' गीत कंठस्थ प्रतियोगिता का आयोजन हुआ महिला मंडल की बहनें, सभा के भाई और ज्ञानशाला के बच्चों ने भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया साध्वीश्री ने सभी को इस गीत को कंठस्थ करने की प्रेरणा दी अनेक भाई बहनों ने कंठस्थ करने का संकल्प लिया इस प्रतियोगिता में ज्ञानशाला के बालक दक्ष कोठारी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर ज्ञानशाला का नाम रोशन किया दूसरा स्थान विद्या कोठारी तीसरा स्थान सुरेश जी कोठारी का रहा लगभग 18 भाई बहनों ने भाग लिया डॉ सरलयशा जी, साध्वी ऋषिप्रभा जी ने सभी को गीत कंठस्थ करवाए।

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए।
जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।
— आचार्य श्री महाश्रमण

विशेष ज्ञानशाला का आयोजन

ब्यावर।

पूज्य गणाधिपति गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित ज्ञानशाला उपक्रम के अंतर्गत साध्वी कीर्तिलताजी के सान्निध्य में 15 वर्ष और उससे कम आयु के बच्चों हेतु विशेष ज्ञानशाला का आयोजन मुथा भवन, ब्यावर में किया गया जिसमें तेरापंथ समाज के 18 बच्चों ने भाग लिया।

उक्त ज्ञानशाला के आयोजन में तेरापंथ सभा के मनीष रांका, युवक परिषद के शेरसिंह मरलेचा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा चंद्रकांता दुगड़ एवं मंत्री सुनीता सकलेचा का

विशेष सहयोग रहा। ज्ञानशाला के दौरान साध्वीश्री जी द्वारा बच्चों को गुरुवंदन कैसे किया जाए इसकी विधि बताई गई साथ ही 'अहंम-अहंम की वंदना फले' प्रार्थना के साथ ज्ञानशाला की विधिवत शुरुआत की गई।

ज्ञानशाला में बच्चों को 25 बोल में से 10 बोल, नमस्कार महामंत्र, साधु-साध्वियों को किस प्रकार विधिपूर्वक वंदन किया जाए वंदन पाठ, परमेष्ठी वंदन, तेरापंथ आचार्य परंपरा के 11 आचार्य के नाम, जैन शासन के 24 तीर्थंकर परंपरा के नाम, गुरु वंदन पाठ, सामायिक पाठ एवं सामायिक आलोचना इत्यादि कंठस्थ करवाए गए।

साध्वीश्री के द्वारा ज्ञानशाला के महत्व को समझाते हुए अभिभावकों के साथ बैठक कर ज्ञानशाला को अनवरत रूप से प्रत्येक रविवार को चलने हेतु श्रीमती इंदु भटेवरा आशा रांका एवं इंदु मुथा, पुरुष वर्ग में दयाराम जी एवं अभय जी सांखला को ज्ञानशाला संरक्षक/संरक्षिका के रूप में मनोनीत किया गया तीन दिन की ज्ञानशाला में आए हुए बच्चों के अल्पाहार की व्यवस्था तेरापंथ सभाध्यक्ष धनराज रांका के द्वारा की गई। अंत में तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष मुकेश रांका द्वारा बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु पुरस्कार वितरण किया गया।

महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस का आयोजन

छतरपुर, महरोली।

साध्वी कुन्दनरेखा के सान्निध्य में, अणुव्रत विश्वभारती के निर्देशन में एवं अणुव्रत समिति न्यास के तत्वाधान में महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस को जीवन विज्ञान दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए साध्वी कुन्दनरेखा जी ने कहा जीवन विज्ञान जीवन के रहस्यों से परिचित करवाता है। जीना सिखाता है और सौहार्द, मैत्री के रहस्यों से परिचित करवाता है। जीना सिखाता है और सौहार्द, मैत्री का वातावरण भी निर्मित करता है आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान जीवन विज्ञान नकारात्मक भावों से हमेशा

बचाता है और सकारात्मक भावों का निर्माण कर हर इंसान को आनन्दमय माहौल में रहना सिखाता है। महाप्रज्ञ अलंकरण किसी व्यक्ति के लिए नहीं, अपितु आध्यात्मिक ऊर्जा का संप्रेषण हुआ था साध्वी सौभाग्ययश जी ने कहा शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का सुन्दरतम उपाय है- जीवन विज्ञान। साध्वी कल्याणयश ने कहा विद्यार्थियों के जीवन का सर्वोत्तम उपाय है- जीवन विज्ञान, जो हर इंसान को महान बनाता है।

मुख्य अतिथि इन्द्रजीत विशारद, हाफिर जमील रहमान, गोपाल शर्मा एवं मोहम्मद सी एम त्यागी ने अपने विचारों में जीवन विज्ञान का जिंदगी

का तौहफा बतलाते हुए कहा आत्मा का ज्ञान एवं स्वयं की पहचान कराने में सक्षम है- जीवन विज्ञान। जीना भी सिखाता है, बढ़ना भी सिखाता है। सहना कहना और रहना भी सिखाता है- जीवन विज्ञान। आचार्य महाप्रज्ञ को शतशः नमन।

मनोज खटेड़ ने कुशल संचालन किया। मतिराज गुनेचा एवं रश्मि जैन आदि ने जीवन विज्ञान गीत का संगान किया। संजय भाई अणुव्रती ने कहा हम सौभाग्यशाली हैं कि मुझे आचार्य तुलसी- महाप्रज्ञ का शासन देखने को मिला। आचार्य महाश्रमण अपने गुरुओं के मिशन को आगे बढ़ा रहे हैं। आभार ज्ञापन विश्वास कुमार ने किया।

आचार्यश्री तुलसी का 112वां जन्मोत्सव मनाया गया

आमेट।

तेरापंथ भवन में विराजित साध्वी सम्यकप्रभाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में आचार्य श्री तुलसी के 112वें जन्मोत्सव मनाया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

साध्वी श्री सम्यकप्रभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि गुरुदेव तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ को सात समन्दर पार पहुंचाया। तुलसी की लंबी जीवन यात्रा एवं विकास कार्य में कुछ नया करने का साहस था। 22 वर्ष में

आचार्य बनकर उन्होंने अपनी यात्रा का शुभारंभ किया।

आपकी वाणी इतनी आकर्षक थी कि जब वो बोलते तब लोगों खींचे चले आते हैं। आपने जो अणुव्रत का बीज बोया वह किसी जाति संप्रदाय के लिए नहीं समूचित मानव जाति के लिए एक प्रेरणा बनकर सार्थक हुआ। साध्वीश्री ने आमेट अणुव्रत समिति के कार्यों की सराहना की।

साध्वी सौम्यप्रभा जी ने आचार्य तुलसी के अवदानों को गीतिका के माध्यम से प्रस्तुत किया। साध्वी दीक्षितप्रभा जी ने कहा कि आचार्य श्री

तुलसी अपने शरीर की चिंता ना कर धर्मसंघ के विकास पर ज्यादा चिंतन करते थे।

राष्ट्रसंत तुलसी को भारत ज्योति सम्मान जैसे अनेक सम्मान मिले। आचार्यश्री तुलसी ने अनेकों अवदानों के द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ को शिक्षों पर पहुंचाया हैं। ऐसे महापुरुष को श्रद्धानंत नमन करते हैं।

इस अवसर पर प्रेमादेवी रांका ने सुमधुर गीतिका से आचार्यश्री तुलसी को वंदन किया। सभी संस्था के पदाधिकारी महोदय व श्रावक- श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

सम्यक दर्शन कार्यशाला की परीक्षा में 821 परीक्षार्थियों ने रचा इतिहास

बालोतरा।

आचार्य श्री भिक्षु के त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में समण संस्कृति संकाय एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के संयुक्त तत्वावधान से तेरापंथ युवक परिषद-बालोतरा द्वारा 'आचार्य भिक्षु' पुस्तक पर आधारित परीक्षा का आयोजन हुआ। तेयूप मंत्री राजेंद्र वैदमुथा ने बताया सम्यक दर्शन कार्यशाला के जो 15 दिन चली उसके 864 संभागी ने रजिस्ट्रेशन कराया और उसमें से 821 संभागी ने परीक्षा देकर एक नया इतिहास रचा है।

यह परीक्षा आचार्य श्री महाश्रमण जी की प्रबुद्ध शिष्या साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। तेरापंथ युवक परिषद बालोतरा के अध्यक्ष संदीप रेहड़

ने बताया की सम्यक दर्शन कार्यशाला में पिछले कई वर्षों से तेरापंथ युवक परिषद बालोतरा पूरे भारतवर्ष में प्रथम स्थान पर अंकित होता रहा है।

उन्होंने कहा कि हमें गर्व है कि बालोतरा का श्रावक समाज सदैव आध्यात्मिक कार्यक्रमों में अग्रणी रहता है और अपनी समर्पण भावना से नई मिसाल कायम करता है। इस कार्यशाला के संयोजक राहुल जीरावला व सहसंयोजक प्रकाश रांका की देख रेख और संभागियों से सम्पर्क करते हुए पूरी कार्य व्यवस्था में सहयोग दिया।

कार्यशाला के प्रायोजक गोगड़ परिवार (पद्मश्री ग्रुप) द्वारा 'सम्यक दर्शन कार्यशाला' के परीक्षार्थियों का समान किया गया।

संक्षिप्त खबर

सामूहिक ॐ भिक्षु महाजप अनुष्ठान का आयोजन

गुवाहाटी। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा विश्व शांति के उद्देश्य से सामूहिक 'ॐ भिक्षु' महाजप अनुष्ठान का आयोजन प्रातः 9 से 11 बजे तक किया गया।

कार्यक्रम में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रबुद्ध सुशिष्य मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी तथा मुनि रमेश कुमार जी आदि ठाणा-4 का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती सुशीला मालू ने की, जबकि संचालन एवं व्यवस्था में मंत्री श्रीमती सुचित्रा छाजेड़ की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की परामर्शक श्रीमती रंजू खटेड़ तथा कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती सुनीता गुजरानी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

इसके अतिरिक्त संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों, गणमान्य व्यक्तियों एवं तेरापंथ समाज के सदस्यों की appreciable सहभागिता से कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। आचार्य श्री भिक्षु जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित इस आध्यात्मिक आयोजन के दौरान 'ॐ भिक्षु' मंत्रोच्चारण से धर्मस्थल का संपूर्ण वातावरण भक्तिमय एवं गुंजायमान हो उठा। श्रद्धा, भक्ति और एकाग्रता से ओतप्रोत भावों के साथ "ॐ भिक्षु, जय भिक्षु" के जप ने उपस्थित श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक ऊर्जा एवं सकारात्मक भाव से भर दिया। अनुष्ठान का समापन मुनि श्री के मंगलपाठ के साथ हुआ।

'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' जप अनुष्ठान

भायंदर। 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' जप अनुष्ठान तुलसी समवसरण तेरापंथ भवन-भायंदर में 'शासनश्री' साध्वी विद्यावती 'द्वितीय' आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में किया गया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, ज्ञानशाला प्रशिक्षक, तेरापंथ कन्या मंडल सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। 173 श्रावक-श्राविकाओं ने भवन में एवं ऑनलाइन जप किया। वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया जप का क्रम अत्यंत अनुशासित और भावपूर्ण रहा जहाँ सभी ने पूर्ण श्रद्धा से आचार्य श्री भिक्षु को श्रद्धासुमन अर्पित की।

'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' जप अनुष्ठान

हैदराबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन व तेरापंथ महिला मंडल-हैदराबाद के तत्वावधान में 9 बजे से 10 बजे तक 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' जप अनुष्ठान किया गया। यह जप अनुष्ठान विश्व शांति व सद्भावना के उद्देश्य से किया जा रहा है जो 13 दिवसीय अखंड जप है।

इस तरह दिवसीय अखंड जप में सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि विश्व के अनेकों देशों में प्रवासरत श्रावक श्राविका समाज भी पूरी श्रद्धा व समर्पण के साथ जुड़े हुए हैं। इसी महाजप अनुष्ठान के अंतर्गत हैदराबाद महिला मंडल ने

अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। जप सुचारू रूप से संपादित हो इसके लिए हैदराबाद में आठ जगह सेंटर बनाए गए। डी वी कोलोनी सिकंदराबाद, हिमायत नगर भवन, अत्तापुर, मानसरोवर, कवाडीगुडा(2), बरकतपुरा, शिवरामपल्ली। इन जगहों पर भाई बहनों ने सामूहिक जप किया। इसके साथ ही काफी संख्या में श्रावकों ने अपने-अपने घरों में जूम के माध्यम से जप में सहभागिता दी। सबके सहयोग से कुल 611 लोगों ने जप अनुष्ठान में भाग लिया और विश्व शांति हेतु प्रार्थना की। तेरापंथ भवन डी वी कॉलोनी सिकंदराबाद में यह अनुष्ठान आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदूषी सुशिष्या डॉ.साध्वी गवेषणाश्री

जी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में हुआ। जहाँ 151 लोगों ने सामूहिक जप किया। डॉ.साध्वी गवेषणाश्री जी ने अपने उद्बोधन में फ़रमाया कि विश्व हिंसा के गर्त में डूबता जा रहा है, वहाँ इस चमत्कारी मंत्र की जप रश्मियां अवश्य प्रभावशाली होगी। जप की ध्वनि तरंगें सम्पूर्ण वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। इस जप अनुष्ठान की संयोजिका अंजू बैद, रीटा सुराणा, डिंपल बैद, डिंपल श्रीमाल, शकुंतला बुच्चा, सरिता डागा, अंजू बैंगानी, अर्चना बोथरा, मंजू दुगड़ और अनिता छाजेड़ थी। अध्यक्ष नमिता सिंधी और मंत्री निशा सेठिया के श्रम से यह आयोजन सुचारू रूप से संपादित हुआ।

नवसम्बत्सर आध्यात्मिक अनुष्ठान एवं मंगल पाठ

किलपाँक, चेन्नई।

युगप्रधान आचार्य महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में भिक्षु निलयम,किलपाँक में वीर संवत् 2552 के प्रथम दिन का आगाज श्री, धी, धृति, शान्ति, शक्ति, तेजस्विता और विघ्न हरण मंत्रों की आराधना से हुआ।

नवसम्बत्सर आध्यात्मिक अनुष्ठान का उपक्रम नमस्कार महामंत्र के साथ सिद्ध स्तवन आदि अनेक विशिष्ट मंत्रों के

संगान से प्रवर्धमान किया गया। मुनिश्री मोहजीत कुमार जी ने मंत्राराधक विशाल परिषद को संबोधित करते हुए कहा कि नव वर्ष आचार में पवित्रता, विचार में उदारता, व्यवहार में पारदर्शिता, भाषा में माधुर्यता का संचार करने वाला बने।

जीवन की हर प्रकृति संयमित और सात्विक हो। शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और आध्यात्मिक ऊर्जा का विकास हो। जीवन का हर पल ऊर्जावान-मंगलमय हो। इस अवसर पर मुनि जयेश कुमार जी ने कहा - मानव

को नव्यता पसंद है। हर चीज अपग्रेडेड और नई होनी चाहिए।

यह नव्यता की चाह सिर्फ बाहरी वस्तुओं के लिये ही ना हो अपितु हम अपने आप में भी नयापन लाएं। नव संवत्सर के अवसर पर हम ऐसे संकल्प ग्रहण करें जो हमें हमारे नए स्वरूप को डिस्कवर करने और बेहतर भविष्य के निर्माण में योग्य बनाएँ।

सभाध्यक्ष अशोक परमार ने सम्पूर्ण समाज को दीपावली एवं नव संवत्सर की शुभकामनाएं प्रेषित की।

भिक्षु प्रीमियर लीग प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल विजयनगर द्वारा साध्वी संयमलता जी ठाणा -4 के पावन सान्निध्य में तेरापंथ धर्म संघ के आद्य प्रवर्तक महामना भिक्षु के त्रिशताब्दी अवसर पर भिक्षु प्रीमियर लीग प्रतियोगिता का आयोजन तेरापंथ भवन- विजयनगर में किया गया।

साध्वीश्री द्वारा मंगल पाठ के द्वारा प्रतियोगिता की शुरुआत हुई। संचालक हर्ष मांडोट एवं प्रिंस मांडोट द्वारा प्रतिभागियों को चार टीम में विभक्त किया गया, जिनका नाम क्रमशः बगड़ी के सुरमा,सिरियारी के सितारे, कंटालिया के धुरंधर, केलवा के महारथी था, टीमों को क्रिकेट के नियमों से भिक्षु के जीवन पर आधारित विभिन्न

प्रश्न पूछे गए, प्रथम राउंड में केलवा के महारथी एवं बगड़ी के सुरमा विजेता रही जिनके बीच फाइनल मैच खिलाया गया, जिसमें केलवा के महारथी इस प्रतियोगिता की विजेता रहे।

साध्वी संयमलता जी ने किसी भी कार्य को सफल बनाने में श्रम, समय एवं संगठन की आवश्यकता होती है तेयुप एवं किशोर मंडल ने पूरी टीम के साथ अच्छी और सुंदर प्रस्तुति की, ऐसे ही युवा पीढ़ी आध्यात्मिकता की सुंदर प्रस्तुति करते रहे।

साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा प्रतियोगिता धर्म को नए तरीके से प्रस्तुत करने का सरल माध्यम है, AI के युग में किशोर आध्यात्मिकता के मार्ग पर ऐसे ही आगे बढ़ते रहें। ज्ञातव्य है कि इस प्रतियोगिता को सफलतम संपादित करवाने में साध्वी मार्दवश्री

जी का विशेष मार्गदर्शन रहा। किशोर मंडल संयोजक दर्शन बाबेल, रिदम चावत, हर्ष मांडोट एवं प्रिंस मांडोट का सराहनीय श्रम रहा।

साथ ही किशोर मंडल प्रभारी पीयूष ललवानी का सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत में विजेता टीम सहित सभी प्रतिभागियों को प्रायोजक-मनोहर लाल-राकेश-मुकेश जी बाबेल परिवार द्वारा पुरस्कार दिया गया।

इस अवसर पर तेरापंथ की सभा विजयनगर अध्यक्ष-मंगल कोचर, तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर अध्यक्ष विकास बाँठिया, प्रबंध मंडल से पवन बैद, अमित नाहटा, महिला मंडल उपाध्यक्ष सुमित्रा बरडिया, तेयुप हनुमंत नगर अध्यक्ष स्वरूप चोपड़ा सहित श्रावक समाज की गरिमामय उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप अथवा abtyptt@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।

<https://terapanthtimes.org/>

:: निवेदक ::



अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

प्रेरणा उद्बोधन कार्यक्रम का आयोजन

इचलकरंजी।

तेरापंथ भवन में Echo Friendly Festival के अंतर्गत अहम ज्ञानशाला में बच्चों के लिए प्रेरणा उद्बोधन का कार्यक्रम रखा गया। सर्वप्रथम अणुव्रत समिति के मंत्री संतोष भंसाली ने सभी का स्वागत करते हुए Echo friendly Festival के बारे में संक्षिप्त में सभी बच्चों एवं प्रशिक्षक गण को जानकारी एवं महत्त्वता बताई।

जीवन विज्ञान ट्रेनर एवं यह कार्यक्रम के स्पीकर सावी छाजेड ने सभी बच्चों को हर त्यौहार पर्यावरण शुद्ध एवं सादगी पूर्ण बनाने चाहिए ऐसा अपने व्यक्तव के माध्यम से बताया। जीवन विज्ञान के संयोजक एवं इस कार्यक्रम के मुख्य स्पीकर विकास सुराणा ने सभी बच्चों

को अपने वक्तव्य में बताया कि हर फेस्टिवल हमें एक ऊर्जा देती है। हर फेस्टिवल में हम सबको यह ध्यान रखना है की हमारी वजह से दुसरो को कोई हानि ना हो। हमेशा हमारा घर, नगर, शहर और हमारा देश को पर्यावरण शुद्ध रखना चाहिए। दीपावली जैसे फेस्टिवल हमें बड़े ही शांतिपूर्वक एवं सुन्दर रूप से और फटाके के बिना मनाना चाहिए।

विकास ने सारे बच्चों को संकल्प करवाया की इस दिवाली पे दीपो से दीप जलाके और फटाके मुक्त मनाएंगे। मंत्री संतोष भंसाली ने दोनो मुख्य वक्ताओं का एवं ज्ञानशाला के प्रति आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में ज्ञानशाला के ३५ बच्चे और ज्ञानशाला संयोजिका रजनी पारख, सहसंयोजिका नीतू छाजेड, एवं सभी प्रशिक्षक गण उपस्थित थे।

प्रणति जपोत्सव का भव्य आयोजन

सिटीलाईट, सूरत।

प्रोफेसर डॉ. साध्वीश्री मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा से नमस्कार महामंत्र का घर-घर में चातुर्मासिक जप अभियान संचालित हुआ। जप समापन अवसर पर प्रणति जपोत्सव के रूप में साध्वीश्री द्वारा विशेष अनुष्ठान करवाया गया।

साध्वीश्री ने विशाल परिषद को संबोधित करते हुए कहा कि — नमस्कार महामंत्र श्वासोच्छ्वास के समान है। जैसे जीवन का संचालन श्वासोच्छ्वास से होता है, उसी प्रकार अध्यात्म की यात्रा नवकार मंत्र से प्रारंभ होनी चाहिए। जैन साधकों को जीवन से मृत्यु तक मरमेष्टी आज्ञावंदन करनी चाहिए। यह शक्तिशाली भक्ति-परक महामंत्र हमें विरासत में प्राप्त हुआ है, जो हमारी सुरक्षा, गौरव और परंपरा का

प्रतीक है। नमस्कार महामंत्र हमें शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक समाधि प्रदान करता है। इस महामंत्र की आराधना निष्ठा, आस्था और श्रद्धा के साथ करनी चाहिए, जिससे अनुभवगत आनंद, शक्ति व शांति की प्राप्ति होती है। इसके माध्यम से जीवन के कई गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन होता है तथा समस्याओं का समाधान भी प्राप्त होता है।

साध्वीश्री द्वारा बीज मंत्रों के साथ पंचभूत (तत्व) साधना का विशेष प्रयोग करवाया गया। उल्लेखनीय है कि चातुर्मास के दौरान सैकड़ों कार्यक्रमों के साथ सौ करोड़ भिक्षु जप आराधना का आयोजन किया गया, जिसमें श्रावक-परिवारों ने घर-घर में नमस्कार महामंत्र का जप अनुष्ठान किया। तेरापंथ सभा सदस्यों तथा भजन मंडली ने मंत्रों के राजा नमस्कार मंत्र का उच्च स्वर

व मधुर भावों के साथ संगान किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी तथा साध्वी राजुलप्रभा जी ने प्रणति जपोत्सव आरोहण मंगल महाप्रज्ञा गीत का संगान कर संपूर्ण साधकों को भक्ति-रस से अभिभूत कर दिया। इस महामंत्र जप अभियान में लोगों ने पूर्ण निष्ठा व तल्लीनता से भाग लिया।

अनेक परिवारों ने प्रथम बार अपने घर में जप-अनुष्ठान कर आनंद, शक्ति और सकारात्मक अनुभव प्राप्त किए। समापन अवसर पर साध्वीश्री ने संपूर्ण परिषद को नमस्कार महामंत्र को जीवन-यात्रा से अनिवार्य रूप से जोड़ने की प्रेरणा प्रदान की। उपासक अर्जुन मोड़तवाल ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए काव्यात्मक भावांजलि अर्पित की। जप-कर्ताओं ने अपने अनुभव साझा किए तथा आगामी जप आयोजन हेतु संकल्प भी व्यक्त किया।

ॐ भिक्षु अखण्ड जप अनुष्ठान का आयोजन

साउथ दिल्ली।

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर ABTMM द्वारा निर्देशित ॐ भिक्षु अखण्ड जप अनुष्ठान में साउथ दिल्ली महिला मंडल द्वारा 2 जगहों पर जप किया गया। 'भारत व विश्व शांति के लिए एक ही तरंग ॐ भिक्षु जप अनुष्ठान - गुरु भक्ति और सद्भावना का विश्वव्यापी संदेश।' इस संदेश के साथ गोयल श्रद्धा भवन ग्रीन पार्क में 'शासनश्री' साध्वी संघमित्रा जी के पावन सान्निध्य

में व्यवस्थित जप का क्रम चला। मंत्री संगीता दुगड़ व अक्षा छाजेड ने सभी व्यवस्था को सुचारु रूप से संभाला। साध्वी संघमित्रा जी ने ABTMM के इस प्रयास की सराहना की और प्रत्येक तेरस को धम्म जागरणा की प्रेरणा दी। 25 व्यक्तियों ने इस जप अनुष्ठान में भाग लिया। अध्यात्म साधना केंद्र महारौली में भी वात्सल्य पीठ पर साध्वी डॉ. कुंदनरेखाजी जी के पावन सान्निध्य में व्यवस्थित जप का क्रम चला। वहां भी 25 व्यक्तियों की सहभागिता रही।

मंडल अध्यक्ष सरोज भूतोड़िया, बबीता बोहरा, रश्मि नौलखा ने सभी व्यवस्था को सफलता पूर्वक संचालित किया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ट्रस्टी शायर बैंगानी, परामर्शक प्रभा मालू, सहसंगठन मंत्री हेमा चौरड़िया, कार्यसमिति सदस्या सुनीता डुंगरवाल की जप अनुष्ठान में गरिमायु उपस्थिति रही। लगभग 40 व्यक्तियों ने जूम लिंक के माध्यम से घर से इस जप अनुष्ठान में भाग लिया। भाग लेने वाले सभी के प्रति कृतज्ञता धन्यवाद।

बच्चों को दिया व्यसन मुक्त जीने का संदेश

बीकानेर।

जिला उद्योग संघ में तपस्वी मुनि कमलकुमार जी ने जैन अनुयायियों, पुण्यार्थम ट्रस्ट द्वारा संचालित संस्कार केंद्रों में अध्ययनरत विद्यार्थियों तथा उद्यमियों को संबोधित करते हुए कहा कि मनुष्य चाहे किसी का भला करने में समर्थ हो या नहीं, लेकिन किसी का बुरा कभी नहीं करना चाहिए। उन्होंने बच्चों को स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए कहा कि किसी भी त्यौहार या उत्सव को आपसी भाईचारे व सौहार्द के साथ मनाएं, किंतु इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उत्सव के कारण पर्यावरण प्रदूषित न हो

और आसपास के जीवन पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े। मुनि श्री ने उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं, अपने परिवार एवं समाज के स्वास्थ्य और संस्कारों पर ध्यान देना चाहिए तथा व्यसन से दूर रहते हुए सात्विक जीवन अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि मेरा उद्देश्य आप सभी को श्रेष्ठ इंसान बनाना है। यदि आप मानवता और सद्कर्मों के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे, तो जीवन में आने वाली बाधाएं स्वतः दूर होती जाएंगी और देश का नाम भी गौरवान्वित होगा। कार्यक्रम के दौरान बीकानेर जिला उद्योग संघ के अध्यक्ष द्वारकाप्रसाद पचीसिया ने मुनि श्री को बीकानेर की

लगभग 500 वर्षों की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने वाली आर्ट गैलरी का भ्रमण करवाया। भगवान महावीर चाइल्ड वेलफेयर ट्रस्ट के 240 विद्यार्थियों को ज्ञान पुस्तिकाएं एवं शिक्षण सामग्री वितरित की गई। कार्यक्रम में नरेश मित्तल, कन्हैयालाल बोथरा, विमल सिंह चोरड़िया, लूणकरण छाजेड, बसंत नौलखा, अनंतवीर जैन, किशनलाल बोथरा, धर्मेन्द्र डाकलिया, नारायण चोपड़ा, राजकुमार पचीसिया, अशोक गहलोत, भंवरलाल चांडक, महावीर दफ्तरी, विपिन मुसरफ, पूनमचंद राइका सहित जैन समुदाय के अनेक श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।

चित्त समाधि शिविर का आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

समाधि का सबसे बड़ा कारण है- इन्द्रियों का संयम मुनि जिनेश कुमार युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में चित्त समाधि शिविर का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल, पूर्वांचल द्वारा भिभु विहार में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा चित्त समाधि का संबंध आध्यात्मिक प्रसन्नता और मानसिक शांति से है। समाधान का नाम समाधि है। जो आदि व्याधि, उपाधि से मुक्त होकर समाधि का जीवन जीता है वह बादशाह से कम नहीं है। बदलते परिवेश में व्यक्ति तनाव व असमाधि की और जा रहा है।

जिससे व्यक्ति शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक बीमारियों से ग्रसित हो रहा है। घर का वातावरण दूषित हो रहा है। परिवार टूटते जा रहे हैं। व्यवसाय पर बुरा असर पड़ रहा है। कलह का वातावरण निर्मित हो रहा है। इन्द्रियों का असंयम, आग्रह, असहिष्णुता, संदेह, अविश्वास, ईर्ष्या, द्वेष, असमाधि के कारण है। चित्त प्रसन्नता नहीं हो तो भाव अशुद्ध होंगे।

भाव अशुद्ध है तो व्यक्ति सद्गति को प्राप्त नहीं होगा। मुनिश्री ने आगे कहा तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य चार तीर्थ को समाधि में रहने की प्रेरणा देते रहते हैं और पूरा ध्यान रखते हैं। जिससे चार तीर्थ समाधि में रहे। चित्त प्रसन्न है तो व्यक्ति दुखों से छुटकारा पा लेगा। चित्त समाधि के लिए इन्द्रिय संयम, अनाग्रह, अनावेश वाणी संयम, आहार संयम व एक

दूसरे का ध्यान रखना चाहिए। मुनिश्री ने द्वितीय चरण में विचार रखते हुए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराए। इस अवसर पर मुनि परमानंद ने कहा- जो व्यक्ति चित्त समाधि में रहता है उसे कोई दुःखी नहीं बना सकता। जहाँ अपेक्षा, उपेक्षा में मन उलझता है वहाँ वह दुखी होता है। और जहाँ मन अपनी समीक्षा करता है, शांति रखता है यहाँ वह चित्त समाधि में रहता है। मुनि कुणाल कुमार जी ने 'चित्त समाधि मय हो' गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण में अध्यक्ष बबीता तातेड़ व आभार महिला मंडल की मंत्री नीतू बोथरा ने किया। संचालन मुनि कुणाल कुमार ने किया। द्वितीय चरण में प्रेक्षा प्रशिक्षिका मंजु सिपानी अनुप्रेक्षा करवाई।

मेधावी छात्र सम्मान समारोह का आयोजन

बेंगलुरु।

टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट ने आरआर नगर तेरापंथ भवन में मेधावी छात्र सम्मान समारोह का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में शैक्षणिक सत्र 2024-2025 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों और किसी भी विश्वविद्यालय परीक्षा में टॉपर रहे छात्रों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 9 बजे साध्वी वर्धमानयशा जी के द्वारा गीतिका से हुई। टीपीएफ बेंगलुरु वेस्ट की टीम निशा कटारिया, सुमित धारेवा और निर्मल चावत ने मंगलाचरण किया।

टीपीएफ वेस्ट के अध्यक्ष ललित बेगानी ने सभी छात्रों, अभिभावकों और श्रावक समाज, सभा और टीपीएफ

सदस्यों का स्वागत किया और कार्यक्रम के उद्देश्य और टीपीएफ की छात्रवृत्ति सुविधा के बारे में जानकारी दी। टीपीएफ साउथ जोन के अध्यक्ष विक्रम कोठारी ने टीपीएफ के बारे में जानकारी दी और छात्रों को धर्म संघ के साथ जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया। आरआर नगर सभा के अध्यक्ष राकेश छाजेड और विजयनगर सभा के अध्यक्ष मंगल कोचर ने भी छात्रों के साथ आध्यात्मिक और शैक्षणिक जीवन के महत्व पर चर्चा की। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता राकेश खटेड़ ने अध्यात्म और विज्ञान के बीच संबंधों पर चर्चा की और महावीर स्वामी के बहुचर्चित सिद्धांतों को वर्तमान विज्ञान प्रयोगों के साथ जोड़ा। उन्होंने मस्तिष्क की शक्ति को बढ़ाने के लिए RRR रिसीव, रिटैन

और रिकॉल थ्योरी के बारे में भी बताया। साध्वी पुण्ययशा जी ने अपने उद्बोधन में छात्रों और अभिभावकों को अंकों के आगे की दुनिया के बारे में बताया और वर्तमान जीवन के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता पर जोर दिया। कार्यक्रम के अंत में टीपीएफ टीम ने सभी छात्रों और अभिभावकों का सम्मान पदक, प्रमाण पत्र और उपहार देकर किया। टीपीएफ वेस्ट के मंत्री कौशल खटेड़ ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यक्रम का संयोजन आशीष सिंधी और निशा कटारिया ने किया। कार्यक्रम में मंजू बोथरा, विक्रम मेहर, सरोज आर बैद, संजय मालू, सौरभ डागा, दीक्षा जैन, निहाल बैद, आशुतोष नाहर, गीतेश पारख, विकास सेठिया, रश्मि बोथरा की उपस्थिति रही।

कन्या मंडल द्वारा कौन बनेगा भिक्षु भक्त का आयोजन

सिद्धार्थ नगर, मैसूर।

साध्वी सिद्ध प्रभाजी आदि ठाणा 4 के सानिध्य में कन्या मंडल मैसूर द्वारा एक रोचक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साकालीन अर्हत वंदना के पश्चात बुरड भवन के हाल में कौन बनेगा भिक्षु भक्त प्रतियोगिता का रोचक आयोजन कन्यामंडल द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को दो-दो के जोड़े पिता पुत्री, पति पत्नी, सहेलियों का अध्यक्ष मंत्री, देवर भाभी, मित्रों का गुप बनाकर यह प्रतियोगिता करवाई गई। सभी प्रतियोगियों को साथ-साथ प्रश्न पूछे गए

जिसमें तीन लाइफ लाइन दी गई सभी ने बड़े उत्साह से भाग लिया प्रतियोगिता के निर्णायक की भूमिका में सहेलियों का जोड़ा और देवर भाभी का जोड़ा फाइनल में टाई हुआ उन दोनों जोड़े के साथ रेपीट एक्शन राउंड करवाया गया जिसमें सहेलियों का जोड़ा विजेता घोषित किए गए। यह पूरी प्रतियोगिता कौन बनेगा करोड़पति के तर्ज पर की गई। कन्या मंडल संयोजिका दीसा कटारिया सह संयोजिका सेजल बुरड मानसी दक मुस्कान नौलखा मोना भटेवरा की अहम भूमिका रही। भीम (राज) के सभा अध्यक्ष गोकुल मुनोत की उपस्थिति

रही। यह पूरा कार्यक्रम आचार्य भिक्षु जीवन के प्रश्ननो पर था प्रोजेक्टर पर यह रोचक कार्यक्रम किया गया।

पृष्ठ 1 का शेष

ईमानदारी के प्रति...

विद्यालय के बच्चों में भी ज्ञान के साथ-साथ अच्छे संस्कारों का विकास होता रहे। विद्यालय के प्रिंसिपल हरीश शर्मा ने अभिव्यक्ति दी और आचार्य प्रवर से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। बाबूलाल कोठारी, धनपाल ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

बोलती किताब

आओ हम जीना सीखें

आओ हम जीना सीखें



आचार्य महाश्रमण

जीवन के क्रियातंत्र को संचालित करने वाले तीन तत्त्व हैं—मन, भाषा और शरीर। भाषा संबंधों को विस्तार देती है। यदि भाषा नहीं होती तो हमारी दुनिया बहुत छोटी हो जाती। समाज का निर्माण भाषा से होता है। पशुओं के पास विकसित भाषा नहीं होती इसलिए शायद उनके समूह को समाज भी नहीं कहा जाता। भाषा से अन्तर के भावों की अभिव्यक्ति होती है। हम अपने विचारों को बोलकर दूसरों तक पहुंचा सकते हैं। बोलने की क्षमता संसार के सब प्राणियों के पास नहीं होती। स्थावर जीवों के पास भाषा होती ही नहीं है। शेष तिर्यंच प्राणियों के पास भाषा होती तो है पर वह व्यक्त नहीं होती। एक मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसके पास व्यक्त भाषा है।

कैसे बोलें ? इस प्रश्न के उत्तर का तीसरा सूत्र है—सत्यभाषिता। सत्यभाषिता अर्थात् यथार्थ बोलना। जहां तक बन सके आदमी को झूठ बोलने से बचना चाहिए। झूठ बोलने के मुख्य कारण हैं—क्रोध, लोभ, भय और हास्य। झूठ बोलने वाला व्यक्ति अपना विश्वास खो देता है। साधु के लिए तो नियम है कि वह सत्य महाव्रत का पालन करे। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी असत्य का सहारा न ले। गृहस्थ भले ही पूर्ण सत्य का पालन न कर सके फिर भी बहुत अंशों में वह असत्य से बच सकता है। असत्य से बचने वाले व्यक्ति के जीवन में सहज ईमानदारी अवतरित हो जाती है। सत्य में इतनी शक्ति होती है कि कुछ अंशों में आदमी में भगवत्ता प्रकट हो जाती है। सत्यवादी व्यक्ति को वचन सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

मनुष्य एक क्रियाशील प्राणी है। प्रतिक्षण वह किसी न किसी क्रिया में संलग्न रहता है। सामान्यतया आदमी निष्क्रिय नहीं बैठ सकता। श्रीमद्भगवद्गीता का कथन है—नहि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्मण्यशेषतः। सामान्य शरीरधारी प्राणी सम्पूर्ण क्रिया को छोड़ दे यह सम्भव नहीं है। प्रश्न होता है कि आदमी सबसे अधिक कौनसी क्रिया करता है ? प्रयोग और परीक्षण के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आया कि मनुष्य सबसे अधिक सोचने की क्रिया करता है। सोचना एक ऐसी क्रिया है जो हर क्रिया के साथ सम्पृक्त रह सकती है। व्यक्ति चलते समय सोचता है। खाते समय विचारों के उपवन में घूमता है। यहां तक कि व्यक्ति नींद में भी चिन्तन मुक्त नहीं रहता।

करना और होना, दो अलग-अलग क्रियाएं हैं। दोनों में बड़ा अन्तर है। किसी भी कार्य को करते समय आदमी सावधानी रखे। चिन्तन पूर्वक व योजनाबद्ध कार्य करे। भावी परिणाम को सामने रखकर काम करे, यह जरूरी है। कार्य शुरू करने के बाद जो भी अच्छा-बुरा परिणाम आए, उसे सहजता से झेले। 'जो हुआ वह अच्छे के लिए हुआ' ऐसा मानकर स्वीकार करे। उदाहरण के रूप में हम समझें—एक व्यापारी है। वह व्यापार करता है। व्यापार प्रारम्भ करने से पूर्व वह सोचता है कि मैं व्यवसाय कहां करूं ? किस वस्तु का करूं ? किसके साथ करूं ? यह योजना—निर्माण उसका कर्तव्य है। यह 'करना' हुआ। चिन्तनपूर्वक व्यापार आरम्भ कर दिया। व्यापार शुरू करने के बाद घाटा-मुनाफा जो भी होता है, वह होना है, करना नहीं है। जो हुआ है, वह अच्छे के लिए ही हुआ है। यह विचार व्यक्ति को जीवन की नई दिशा देता हुआ उसके वर्तमान पथ को आलोकित करता है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

लोगस्स कल्प अनुष्ठान का आयोजन

होस्कोटे।

साध्वी सोमयशाजी ठाणा-3 के सानिध्य में लोगस्स कल्प अनुष्ठान हुआ, साध्वीश्री जी ने कहा की लोगस्स को कलयुग का कल्पवृक्ष कहा जाता है। यह स्तुति ग्रंथ शक्तिशाली मंत्रों का संग्रह है, इसकी आराधना से आरोग्य, अंतरदृष्टि और समस्याओं का समाधान मिलता है, चन्द्रमा, सूर्य और सागर के प्रतीक प्रभु का ध्यान करने से निर्मलता, तेजस्विता और गंभीरता का विकास होता है अनुष्ठान विविध मुद्राओं के साथ करवाया गया। इस अनुष्ठान से अनेक लाभ होता है। जैसे मन की प्रसन्नता, चित्त की निर्मलता, भावों की पवित्रता होती

है, पॉजिटिव सोच का विकास होता है। साध्वीश्री जी ने 'चंदेसु निम्लयरा' और 'आरोग्यबोहीलाभ' का बहुत ही सुन्दर तरीके से विवेचन किया। प्रायः सभी भाई-बहनों ने 5 लोगस्स 5 दिशाओं में करने का संकल्प लिया।

100वां गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का दीक्षा दिवस पर तुलसी अष्टकम, मौन सामायिक, उपवास आदि की प्रेरणा दी, अनेकों को संकल्प करवाया। साध्वीश्रीजी का अल्पकालिन प्रवास संघप्रभावक रहा अनेक लोगों ने भिक्षु चेतना वर्ष के उपलक्ष में त्याग प्रत्याख्यान किए। इसी प्रवास में ज्ञानशाला के बच्चों ने साध्वीश्री जी की उपासना कर अपने आपको संस्कारी बनाने का संकल्प लिया।

धर्म की शरण से मिलता है जन्म-मरण की परंपरा से छुटकारा : आचार्यश्री महाश्रमण

हिम्मतनगर।

11 नवम्बर, 2025

जन-जन को जीवन का दिशा बोध प्रदान कराने वाले युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि यह संसार, जिसमें व्यक्ति जन्म-मरण की परंपरा में निरंतर गतिमान रहता है, अधुव और अशाश्वत है।

इसमें व्यक्ति जीवन को प्राप्त करता है और एक दिन अवसान को भी प्राप्त हो जाता है। कोई भी प्राणी व्यक्तिगत रूप से शाश्वत नहीं है—जन्म लेना, जीवन जीना और एक दिन पंचतत्व को प्राप्त होना—यही सृष्टि की व्यवस्था चल रही है।

उन्होंने कहा कि इस संसार में जन्म लेने वाला मनुष्य इस भावना को धारण करे कि वह दुर्गति में न जाए। नरक गति और तिर्यच गति में न जाना पड़े। अभव्य जीवों के तो अनन्तानन्त भव हैं, उनके मोक्ष प्राप्त करने की बात ही नहीं है, परंतु भव्य जीवों को भी अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल में न जाने कितने जन्म-मरण करने पड़ सकते



हैं। अतः व्यक्ति को ऐसा कार्य करना चाहिए कि वह दुर्गति में न जाए।

अपनी योग्यता और क्षमता के अनुरूप अच्छा कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। संसार में रहते हुए जन्म-मरण की परंपरा से छुटकारा

पाने के लिए धर्म की शरण में रहें, तो मुक्ति भी प्राप्त हो सकती है।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि आज हिम्मतनगर आए हैं। नाम में 'हिम्मत' है, तो यहां के लोगों में भी अच्छे कार्यों के लिए हिम्मत हो, और यहां

की जनता में उत्तम धार्मिक भावना बनी रहे। विद्यालय के बच्चों में श्रेष्ठ धार्मिक संस्कार आएँ—इस दिशा में सतत प्रयास होते रहें।

आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरांत साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी

ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि आचार्य प्रवर के प्रवचनों में अनेक बिंदु ऐसे होते हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि सचमुच हम अपने लक्ष्य के निकट पहुँच रहे हैं।

मोक्ष जैसी शाश्वत स्थिति को प्राप्त करने के लिए हमें आत्मा का ध्यान, दर्शन और ज्ञान करने का सतत प्रयत्न करना होगा। जो व्यक्ति आत्मा को देखता और जानता है, वही अमृत को प्राप्त करता है।

तत्पश्चात् समणी विज्ञप्रज्ञाजी ने क्रोध के संदर्भ में अपनी विचाराभिव्यक्ति अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत की।

स्थानीय सभा के अध्यक्ष रतन बोरड़ ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत-गीत का संगान किया। स्कूल के ट्रस्टी अतुलभाई दीक्षित और बीडीओ हर्षदभाई बोहरा ने भी आचार्य प्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

कषाय से प्रेरित होकर न करें कोई भी कार्य : आचार्यश्री महाश्रमण

गाम्भोई, साबरकांठा।

12 नवम्बर, 2025

आध्यात्मिक जगत के महासूर्य महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आध्यात्मिकता और लौकिकता दो पृथक विषय हैं। आध्यात्मिकता में आत्मा की प्रधानता होती है, जबकि लौकिकता में शरीर, पुद्गल और अन्य बाह्य पदार्थों का महत्व होता है।

शास्त्र में कहा गया है कि एक आत्मा की ओर मुख करके रहने वाला 'आत्ममुखी' कहलाता है। कोई आत्ममुखी होता है, कोई पदार्थमुखी, कोई गुरुमुखी और कोई संघमुखी। साधना के क्षेत्र में आत्ममुखी होना परम आवश्यक बताया गया है।

उन्होंने कहा कि व्यक्ति कोई भी कार्य करे तो यह विचार अवश्य करे कि

यह कार्य आत्महित में है या मोह और कषाय से प्रेरित होकर किया जा रहा है। जहां मोह है, वहां संसार है; और जहां निर्मोह है, वहां मोक्ष की दिशा में गति संभव है।

मोह में रहकर मोक्ष दूर रहता है, और मोक्ष की ओर अग्रसर होने पर मोह दूर होता जाता है। व्यक्ति को यह चिंतन बनाए रखना चाहिए—'मैं आत्मा हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ। निश्चय से मैं अकेला हूँ।'

इस संसार में प्रत्येक जीव अपने कर्मों के अनुसार फल भोगता है। अतः 'मैं अकेला हूँ, धन-पदार्थ आदि मेरे साथ नहीं चलने वाले' — यह चिंतन सदा बना रहना चाहिए। जीवन में प्रतिपल सजग रहकर आत्मकल्याण का प्रयास करने वाला दृष्टिकोण ही आदर्श और वांछनीय है।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के पश्चात् समणी अपूर्वप्रज्ञाजी ने



'अहंकार' विषय पर अंग्रेजी भाषा में अपनी विचाराभिव्यक्ति प्रस्तुत की।

स्कूल के प्रिंसिपल कमलेश भाई पटेल ने आचार्य प्रवर के स्वागत में अपनी

भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

शान्त-सहवास सूत्र

अनेक व्यक्ति साथ रहते हैं, वहां नाना प्रकार की स्थितियां उत्पन्न होती है। प्रमाद हो सकता है। व्यवहार और आचरण में खामियां हो सकती हैं। मानसिक दुर्बलता और उससे होने वाली त्रुटियां भी हो सकती हैं। इस स्थिति में खामियों के परिष्कार की बात बहुत महत्वपूर्ण है। पर इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वह परिष्कार कैसे किया जाए? आचार्य भिक्षु ने इस विषय में बहुत सुन्दर मार्गदर्शन दिया। व्यवहार के क्षेत्र में उसकी सर्वत्र उपयोगिता है। उन्होंने लिखा—

किसी साधु में दोषाचरण प्रतीत हो तो अवसर देखकर अविलम्ब उसे सावधान कर दे।

दोषों को चुन-चुन कर इकट्ठा न करे।

दोषाचरण करने वाला प्रायश्चित्त ले तो भी दोषाचरण की बात गुरु को जता दे।

दोषाचरण करने वाला प्रायश्चित्त न ले तो उसे स्वीकार कराकर जो-जो

दोषाचरण के विषय हों उन्हें लिखकर उसे दे दे और उसे कहे— 'इन बातों का तुम्हें गुरु से प्रायश्चित्त लेना है। तम्हें ये प्रायश्चित्त योग्य न लगे तो भी गुरु को बता देना, लुकाव-छिपाव मत करना। यदि तुमने न कहा तो मुझे कहना पड़ेगा। मैं तुम्हारे दोषाचरण की उपेक्षा नहीं करूंगा। मुझे जो शंकासहित प्रतीत होगा, उसे शंकासहित कहूंगा। जिसे निःशंक भाव से जानता हूं, उसे निःशंक भाव से कहूंगा। अभी तुम सीधे मार्ग पर चलो।' उसे इस प्रकार सावधान करे, पर दोषों को इकट्ठा न करे।

यदि दोषाचरण करने वाला इस बात को स्वीकार न करे तो विश्वस्त गृहस्थ को उसके सामने सारी बात जता दे। प्रच्छन्न रूप से उसे कुछ न कहे। यह व्यवस्था चातुर्मासिक प्रवास की स्थिति में है। शेषकाल की स्थिति में किसी को कुछ न कहे। जहां गुरु हो वहां आ जाये और उनके सामने सारी स्थिति रख दे। कोई वितण्डावाद न करे।

अनेक दोषों को इकट्ठा कर उपस्थित होने वाला स्वयं झूठा पड़ेगा। सच झूठ तो केवली जानें, छद्मस्थ के व्यवहार में तो जो दोष एकत्रित करता है, वह अवगुण का भण्डार है।



क्या आप जानते हैं?

लवंग, चीनी आदि से पानी का वर्ण, गन्ध, रस आदि परिवर्तित हो जाएं तो उसे अचित्त माना जाए। परन्तु उसे तपस्या में न पीएं।



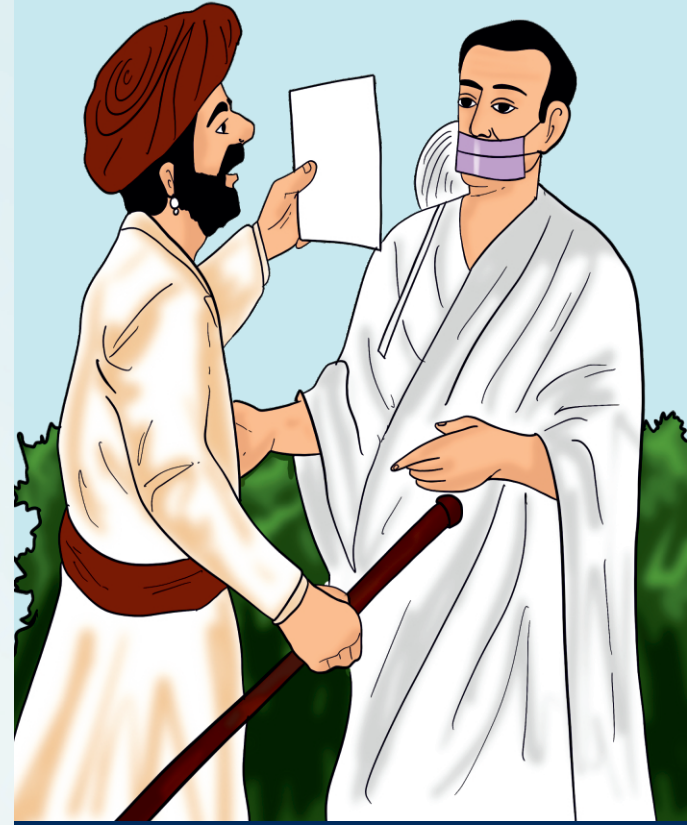
जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को देशावकाशिक व्रत

देशावकाशिक अर्थात् जो देशव्रत लिए है, उसकी सुरक्षा के लिए उसके संयम के लिए है। वैसे तो प्रत्येक व्रत अपने आप में सुरक्षित ही होता है, फिर भी व्रतों में और अधिक सुदृढ़ता के लिए, और अधिक संयम के लिए यह नियम होता है। श्रावक समय-समय पर अपने आप को इन नियमों से भावित करता रहे। यह व्रत अपनी शारिरीक क्षमता को तौलने का मौका तो देती ही है, किंतु अपनी मानसिक शक्ति को तौलने का मौका तो देती ही है, किन्तु अपनी मानसिक शक्ति को परखने का भी पूरा अवसर देती है।

जैसे कि इसका एक छोटा सा नियम यह है कि महीने में कम से कम अमुक दिन नवकारसी-पौरुषी, एकासन-उपवास करूंगा। इससे आहार का भी संयम और स्वास्थ्य का भी लाभ। इसका एक नियम और है कि रात्री भोजन का त्याग करना अथवा जितने दिन चारित्र आत्माओं का ग्राम में अथवा आस-पास के क्षेत्र में विराजे तब तक रात्री भोजन का त्याग रखना उपयोग रखना इस व्रत की विशेष बात यह है कि व्यक्ति यदि चाहे तो घण्टे भर का भी त्याग कर सकता है। तथा कम से कम 10 मिनट संवर की प्रेरणा भी देता है। तथा प्रतिदिन करने योग्य 14 नियम भी इसी के अंतर्गत आता है। अतः श्रावक अपने स्वीकृत नियमों में जागरूकता रखे अपने संयम का विकास करें।



भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी यह किसने देखा?



किसी समय केलवा में ठाकर मोखमसिंहजी ने पूछा— 'आप भविष्य और अतीत का लेखा-जोखा बतलाते हैं। वह किसने देखा है?'

तब स्वामीजी बोले— 'तुम्हारे बाप, दादे और परदादे हुए। तुम उन पीढ़ियों के नाम और उनकी पुरानी बातें जानते हो, वे सब किसने देखे हैं?'

तब ठाकर बोले— बहीभाटों की पोथियों में पुरखों के नाम और बातें लिखी हुई हैं उनके आधार पर जानते हैं।'

तब स्वामीजी बोले— 'बहीभाटों के झूठ बोलने का त्याग नहीं है। उनकी लिखी हुई बातों को भी तुम सच मानते हो, तब फिर ज्ञानी पुरुषों द्वारा कहे हुए शास्त्र असत्य कैसे होंगे? वे सत्य ही हैं।'

यह सुन ठाकर बहुत प्रसन्न हुए और बोले— 'आपने बहुत अच्छा समाधान किया।'



साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह कम से कम 3 सामायिक करने का प्रयास करें।

अध्यात्म जीवन में रहे महावीर-सा पराक्रम : आचार्यश्री महाश्रमण

गडादर।

14 नवम्बर, 2025

भगवान महावीर के प्रतिनिधि, वीतराग साधक महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी राजेन्द्रनगर से मंगल प्रस्थान कर लगभग दस किलोमीटर का विहार परिसम्पन्न कर गडादर में स्थित श्री गडादर प्राथमिकशाला में पधारे। मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी के पावन दिन अमृत देशना प्रदान करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि आज परम वंदनीय श्रमण भगवान महावीर का दीक्षा दिवस है। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी भगवान महावीर का जन्म दिवस है, जिसे हम महावीर जयंती के नाम से जानते हैं। कार्तिक कृष्ण अमावस्या भगवान महावीर की परिनिर्वाण तिथि होती है। वैशाख शुक्ला दशमी भगवान महावीर की कैवल्य प्राप्ति की तिथि है। जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान-प्राप्ति और निर्वाण — ये चार तिथियाँ तथा साथ में च्यवन-तिथि — ये पाँच अत्यंत महत्त्वपूर्ण तिथियाँ मानी जाती हैं।

आज का दिन संयम में पराक्रम का दिन है। जन्म लेना एक सामान्य घटना है, किंतु संयम में पराक्रम एक बहुत बड़ी बात है। आज के दिन भगवान महावीर ने गार्हस्थ्य जीवन त्यागकर साधुत्व को स्वीकार किया था। 'सारे पाप कर्म मेरे लिए अकरणीय हैं' —



यह अभिग्रह आज ही के दिन लिया था। उस समय भगवान महावीर की आयु लगभग 30 वर्ष थी।

यह दीक्षा-क्रम आज भी चल रहा है। हमारे धर्मसंघ में प्रायः हर वर्ष दीक्षाएँ होती रहती हैं। इस भौतिकता के युग में संयम का क्रम चलना एक शुभ संकेत है। जीवन में दो मार्ग हैं — एक भौतिकता का मार्ग और दूसरा अध्यात्म का मार्ग। कोरी भौतिकता व्यक्ति को अशांति की ओर ले जा सकती है, अतः भौतिकता पर अध्यात्म का अंकुश आवश्यक है। इससे जीवन संतुलित

और श्रेष्ठ बनता है। ऐकान्तिक राग, भोग, व्यवहार और पदार्थवाद का प्रवाह न बढ़े; इन सब पर क्रमशः विराग, त्याग और अध्यात्मवाद का नियंत्रण रहना चाहिए। महावीर ने इसी दिन महान पथ को स्वीकार किया था और यह सौभाग्य की बात है कि आज भी लोग साधुत्व के इस पथ को अपनाने का साहस रखते हैं।

प्रभु महावीर का लगभग साढ़े बारह वर्ष विशिष्ट साधना में बीता। उन्होंने अत्यंत उच्च कोटि की साधना की और साधना-साधना में उनके

मोह का आवरण पूर्णतः नष्ट हुआ। तेरहवें गुणस्थान में प्रवेश कर उन्होंने केवलज्ञान तथा केवलदर्शन की प्राप्ति की। दुनिया में महापुरुषों के होने से अनेक लोगों को सद्मार्ग मिलता रहता है और जीवन की दिशा उत्तम बनती है। इसलिए आवश्यक है कि समय-समय पर महापुरुष अवतरित हों, जो लोगों में सद्भाव और सत्प्रेरणा का संचार करें। कई लोगों में अध्यात्म का उत्साह जागृत हो जाता है और वे भी पराक्रमी बन जाते हैं — इससे समाज को अत्यंत लाभ मिलता है। तीर्थंकर अत्यंत महान

महापुरुष होते हैं, और यह संसार का सौभाग्य है कि इसमें तीर्थंकरों का पूर्ण अभाव कभी नहीं होता।

आज से बारह वर्ष पूर्व, मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी के दिन, राजस्थान के थली क्षेत्र के बीदासर में सन् 2013 में तियालीस लोगों ने साधुत्व स्वीकार किया था। वह एक विलक्षण दीक्षा समारोह था, जिसमें तत्काल मंच पर ही चार व्यक्तियों ने भी दीक्षा का निर्णय लिया था। यह दीक्षा संयम-साधना का श्रेष्ठ उदाहरण है।

महामना आचार्य भिक्षु, जो भगवान महावीर की परंपरा में आचार्य थे, को भगवान महावीर की वाणी के प्रति अत्यंत श्रद्धा और निष्ठा थी। भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु के जीवन में अनेक समानताएँ पाई जाती हैं — इतनी समानताएँ संभवतः जैन शासन के किसी अन्य आचार्य और भगवान महावीर के जीवन में नहीं मिलतीं। हमें भी संयम की दिशा में अग्रसर होने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरांत मुनि अहमं कुमारजी ने अंग्रेजी भाषा में अपनी प्रस्तुति दी। प्राथमिक शाला की ओर से रामाभाई और जसुभाई पटेल ने अपनी अभिव्यक्ति दी तथा आचार्यश्री से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : मंगल विहार



श्रीचरणों में भाजपा गुजरात प्रदेश पूर्व मीडिया कन्वीनर सिद्धार्थ पटेल।



शांतिदूत के दर्शनार्थ पधारे साबरकांठा जिला कलेक्टर ललित सांधू।